ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का साहित्यिक मासिक

शांतिधर्मी

जून-2018

माता रोशनी देवी जी
(1944 – 24.6.2018)

माता निर्माता भवति

₹10

प्रकाशन का 20वां वर्ष

जनहित विकास परिषद हरियाणा द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस ५ जून २०१८ को जीन्द के जयन्ती देवी पार्क में ११ कुण्डीय पर्यावरण शुद्धि यज्ञ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कोथ पीठाधीश्वर महन्त शुक्राईनाथ योगीजी महाराज ने की। यज्ञ के ब्रह्मा सहदेव शास्त्री रहे।

आर्य समाज नरवाना द्वारा ७ दिवसीय योग व चरित्र निर्माण शिविर का समापन ६ जून को भव्य समारोह में स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में हुआ। स्वामी रामवेश जी, सहदेव शास्त्री, सूर्यदेव आर्य, डॉ० अनिल आर्य, ईश कुमार आर्य, पं० मिथिलेश शास्त्री व आर्य समाज के पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

बोहल शोध मंजूषा जनरल के संपादक डॉ० नरेश सिहाग एडवोकेट को साहित्य शोध व जनसेवा के लिए समाज सारथी सम्मान से सम्मानित किया गया।

जीन्द में जनहित विकास परिषद द्वारा जल एवं पर्यावरण यात्रा का भव्य स्वागत किया गया।

आर्य समाज जीन्द जं० में आयोजित समारोह में भजनोपदेश प्रस्तुत करती हुई बहन संगीता आर्या।

वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता श्री शिव कुमार आर्य घरौंडा को मुजफ्फनगर में सम्मानित किया गया।

शान्तिधर्मी परिसर में आयोजित मासिक यज्ञ-सत्संग में आहुति डालते श्रद्धालु।

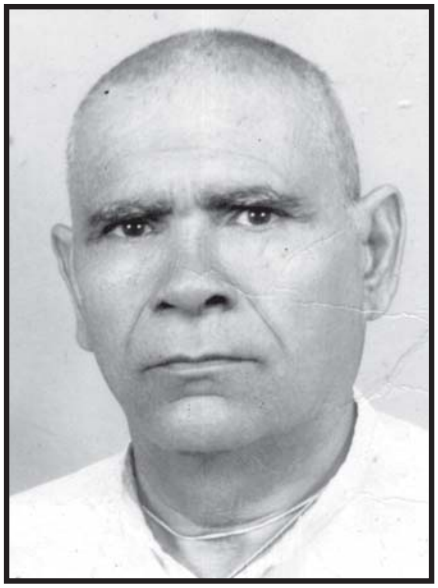

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक

पं० चन्द्रभानु आर्य

सम्पादक : सहदेव समर्पित
(चलभाष 09416253826)
उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री
प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण
आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य
सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा
डॉ० विवेक आर्य
विधि परामर्शक : डॉ० नरेश सिहाग एडवोकेट
सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
कार्यालय व्यवस्थापकः रविन्द्रकुमार आर्य
कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

सहयोग राशि

एक प्रति	:	१०.०० रु०
वार्षिक	:	१२०.०० रु०
आजीवन	:	१०००.०० रु०

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

जून, २०१८ ई०

वर्ष : २० अंक : ५ ~~ज्येष्ठ द्वितीय~~ २०७५ विक्रमी
स ष्टि संवत्-१९६०८५३११९, दयानन्दाब्द : १९५

क्या? कहाँ?....

आलेख

सामवेद अनुशीलन (आत्माहुति) ६
हठवाद का ताण्डव (पुनर्प्रकाशन शांतिप्रवाह) ७
अमरीकी शासन की विशेष बातें (जीवन-दर्शन) १०
दिव्य मातृत्व से ही दिव्य सन्तान १२
गृहस्थो! सुखी होने की कला सीखो १४
वीर प्रसूता माता जीजाबाई १६
कर्मफल व्यवस्था में भ्रान्तियों पर विचार १८
जीवन को उत्तम बनाने के चार उपाय (आत्मिक उन्नति) २०
अग्निहोत्र के आठ सूत्र २२
नींद क्यों नहीं आती (स्वास्थ्य चर्चा) २४
लघु-कथा/प्रसंग : नौकरी का त्याग-८,
माँ की महत्ता/ नकल बिना अकल-२७
कविता : ६, २७, २८,
स्थायी स्तम्भ : प्रेरणा पथ-८, बाल वाटिका-२६, भजनावली-२८

Find us on: facebook

https://www.facebook.com/ShantidharmiHindiMasik

कार्यालय :

७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द–१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ६४१६२–५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

।। आत्म निवेदन।।

जीवन का संगतिकरण

❐सहदेव समर्पित

जीवन जीना शुरु करें तो कहाँ से करें! हमें तो यह भी नहीं पता कि हम जी क्यों रहे हैं। बस सांस आ रहे हैं लिये जा रहे हैं, सफर को खतम हम किये जा रहे हैं। एक छोटे बच्चे को भी पता है कि वह स्कूल में क्या करने आया है। लेकिन मनुष्य को ही यह नहीं पता कि वह जीवन प्राप्त करके दुनिया में क्या करने के लिए आया है! बल्कि अधिकांश लोग तो यही सोचते हैं कि वे इस जीवन से पहले थे ही नहीं। बस यही शुरुआत है यही अंत!

जो चीज हमें प्रत्यक्ष दिखाई दे रही है, उसको हम स्वीकार न करें तो और किसी का दोष निकालने से क्या लाभ? किसी को ईश्वर दिखाई दे न दे, जीवन तो दिखाई दे ही रहा है न! यहाँ तो सब कुछ दिखाई दे ही रहा है। जो है सो तो है ही। हमें शरीर की उन्नति चाहिये। उसके लिए धन की, बल की, सामर्थ्य की उन्नति चाहिये, पर मन की उन्नति भी तो चाहिये। जिस चेतना ही वजह से हमारा होना है, उस के बारे में भी तो हमें सोचना पड़ेगा। नहीं तो जीवन में अभाव ही बना रहेगा। आगे दौड़, पीछे चौड़।

जिसने हमें जीवन दिया। यह जीवन का ताना बाना (तन्तुं तन्वन्) बनाया, उसने हमें जीवन जीने का तरीका भी बताया। हम उस तरीके की उपेक्षा करके जीवन जीने का प्रयास करेंगे तो हमारे जीवन में तमाम विसंगतियाँ उठ खड़ी होंगीं। व्यक्तिगत जीवन में भी सामाजिक जीवन में भी। हम चारपाई बनाने के लिए रस्सी लेकर आते हैं। उस रस्सी बनाने वाले ने अपनी बुद्धि से एक व्यवस्था से उस रस्सी को लपेटा हुआ है। हम उस लपेटने वाले के लपेटने के तरीके को समझकर फिर अपनी बुद्धि का प्रयोग करके उस रस्सी को खोलने का प्रयास करेंगे तो बड़े आराम से वह रस्सी खुल जायेगी। फिर हम उसको अपने तरीके से लपेट लेंगे। लेकिन हम उस बनाने वाले के रस्सी लपेटने के तरीके को जाने बिना अपनी अकल से रस्सी को खोलने का प्रयास करेंगे तो अनाड़ी की तरह उस रस्सी को उलझा देंगे। फिर कोई अनुभवी आयेगा और उस रस्सी को सुलझायेगा। हमने भी उस रस्सी की तरह अपने जीवन को उलझा लिया है। संसार की दृष्टि से हम चाहे कितने भी उन्नत क्यों न हों, व्यक्तिगत जीवन में हम खाली हैं, नितान्त अकेले हैं।

जीवन देने वाले ने बताया कि जीवन को यज्ञ बना लो। अपनी आयु को इस प्रकार बिताओ कि जड़ चेतन सभी देव प्रसन्न रहें। (देवहितं यदायुः) इसका बहुत सरल उपाय है कि जो हमारे जड़ और चेतन दो सहचर हैं उनमें सामंजस्य, व्यवस्था बना कर रखो। (विद्यां चाविद्यां च; सम्भूतिं असम्भूतिं च) जीवन को यज्ञ बना लो। सांसारिक जीवन को कौन उन्नत नहीं करना चाहेगा? लेकिन यह उन्नति हमारे शाश्वत जीवन की उन्नति में बाधा न बने। इसके लिए हमें अपने जीवन का उद्देश्य समझना होगा। हमारे जीवन के सारे क्रियाकलाप उसी मुख्य उद्देश्य में समाहित हैं। हम गृहस्थ में क्यों आये? यदि हम जीवन के उद्देश्य को नहीं समझेंगे तो हम गृहस्थ बने हैं- भोग के लिये। यदि हमें जीवन का उद्देश्य पता है तो हम गृहस्थ में आये हैं उत्तम संन्तान का निर्माण करके पितृ ऋण से उऋण होने के लिये। एक दृष्टि से हम धन कमाते हैं स्टेटस और भोग सामग्री संग्रह करने के लिए। दूसरी दृष्टि से हम धन कमाते हैं अपने शरीर (धर्म साधन) की रक्षा, पुष्टि के लिये। अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के बाद बचे का परोपकार में सदुपयोग करने के लिये। आदि आदि--। एक दृष्टि में हमारी क्षमताएँ विस्तृत होंगी। दूसरी में कुण्ठित होंगी।

संगतिकरण का अर्थ है जो चाहना उसे प्राप्त करने के लिये पूर्ण पुरुषार्थ भी करना। सुख सभी चाहते हैं। पर जैसे वह भोली बुढिया घर के अन्दर अंधेरे में सुई खोकर बाहर प्रकाश में ढूंढना चाहती है वैसे ही हम भी दुःख प्राप्त कराने वाले काम करके सुख प्राप्त करना चाहते हैं। सामाजिक स्थितियों की चिन्ता सब को है। हम समाज का रोना रोते हैं, पर समाज के लिये कुछ करते नहीं हैं। सोच हमारी यह है कि इस सबके लिये केवल हमें छोड़ कर बाकी सब जिम्मेवार हैं। हम बढ़िया पारिवारिक जीवन का रोना रोते हैं पर सामूहिक उन्नति में प्रसन्न नहीं होते। हम स्वस्थ रहना चाहते हैं पर स्वास्थ्य को नष्ट करने वाले अभक्ष्य पदार्थ खाते हैं और अशुद्ध जीवनचर्या अपनाते हैं। हम जीवन में सुख, शाँति, आनन्द, सद्भाव, सन्तोष चाहते हैं पर दिन रात प्रयास करते हैं कोठी, बंगले, बैंक बैलेंस के लिए। यह विसंगतिकरण जीवन की समस्त विडम्बनाओं का कारण है। यह सब जानते हैं, पर इसका उपाय करना नहीं जानते।

वैदिक दर्शन में सुखी जीवन जीना बहुत सरल, सहज और स्वाभाविक है। इसमें सब कुछ परोक्ष के झूठे दिलासे पर आधृत नहीं है। परलोक के जीवन का ध्यान रखते हुए जीने से यह जीवन भी आनन्दमय हो जाता है। आवश्यकता बस यह जान लेने की है कि आखिर हम जी क्यों रहे हैं! फिर हमें यह नहीं कहना पड़ेगा-

जीवन खतम हुआ तो जीने का ढंग आया।

आपकी सम्मतियाँ

मई अंक सुन्दर आवरण के साथ पत्रिका में हर क्षेत्र, हर वर्ग तथा हर उम्र के बच्चों के लिए पर्याप्त उत्तम सामग्री अध्ययन के लिए समाहित है। आपका सम्पादकीय तथा पिताश्री का पन्द्रह वर्ष पूर्व का 'स्वाध्याय जीवन का अंग' सम्पादकीय प्रेरणादायी है। डॉक्टर विवेक जी ने निस्सन्देह स्वामी श्रद्धानन्द जी के बारे में अनछुए प्रसंगों का समावेश किया है, उनके श्रमशील व्यक्तित्व को बधाई।

महेशचन्द्र सोनी,
प्रधान नगर आर्यसमाज, बीकानेर (राजस्थान)

आचरण में धारण नहीं किया तो चाहे कितना ही पढ़ा हो या ज्ञानियों से सुना हो सब निरर्थक है। (शांतिप्रवाह पुनर्प्रकाशन) आज की शिक्षा प्रणाली युवकों को कहाँ ले जा रही है इसका कर्णधारों को भान नहीं है। जातिवादी नेताओं ने अपनी अपनी जातियों के लिये नौकरी के दरवाजे खोल दिये किन्तु लालबहादुर शास्त्री जी ने कभी सिफारिस तक नहीं की। इनके एक चेचेरे भाई बस कण्डक्टर थे। ऐसे ईमानदार नेता जीवित ही नहीं रहने पाते। आज की संस्कार विहीन शिक्षा मात्र धन कमाने की प्रणाली पर आधारित है। देश कहाँ जा रहा है? गाय का दूध बच्चों के पीने के लिये होता है परन्तु आज बीफ का निर्यात हो रहा है! जो बोया वहीं काटना पड़ेगा। बाल वाटिका बच्चों के साथ साथ बड़ों का भी ज्ञानवर्धन करने में सक्षम है।

रामप्रसाद श्रीवास्तव
५/२५९ विराम खण्ड गोमती नगर
लखनऊ २२६०१०

महाराणा प्रताप की वीर गाथा को पढ़कर आँखों से आँसू बहने लगे। बहुत देर तक सोचता रहा कि कितने महान देशभक्त योद्धा इस भूमि पर हुए हैं, जिन्होंने आत्मगौरव और राष्ट्रगौरव के लिये हर वैभव को छोड़कर एक से एक कष्ट उठाना स्वीकार किया। मैं बहुत सी पत्रिकाएँ पढ़ता हूँ। केवल एक शांतिधर्मी ही ऐसी पत्रिका है जो ऐसे महान देशभक्तों से नई पीढ़ी को परिचित करा रही है। मैं महाराणा प्रताप जी को कोटिशः नमन करता हूँ और आपका भी बहुत धन्यवाद करता हूँ।

पूर्णचन्द पसरीजा
राजू बर्तन भण्डार पटियाला चौक जींद-१२६१०२

'आइए जीवन शुरू करें' लाजवाब है। आज की भौतिकतावाद की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण आध्यात्मिकता को पृष्ठभूमि में धकेला जाना निराशाजनक है। क्या विडंबना है कि मनुष्य सारी उम्र भौतिक आवश्यकताओं की पूर्त्ति के लिए गंवा देता है, परमात्मा का ध्यान ही नहीं आता। अधिकांश व्यक्तियों को आखिरी सांस तक भी जीने का ढंग नहीं आता। कहा जाता है- जब जागो तभी सवेरा। क्यों न हम अपना जीवन ऐसा बनाएं कि जरूरत के मुताबिक तो कमाएँ, पर परमात्मा का सिमरन भी करें। सच्चाई, ईमानदारी परिश्रम, समाज कल्याण, दीन दुःखियों की सेवा, माता पिता तथा बुजुर्गों की सेवा तथा उनकी आज्ञा का पालन में समय बिताएँ। केवल यह लोक ही नहीं, परलोक सुधारने की ओर भी ध्यान दें। काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार से बचें। इस प्रेरक संपादकीय के लिए बधाई व शुभकामनाएँ।

प्रो० शामलाल कौशल
975-बी/२० ग्रीन रोड, रोहतक-१२४००१

शांतिधर्मी प्रकाशन के बीसवें वर्ष में समस्त सम्पादक मण्डल एवं पाठक मण्डल को बधाई। शांतिधर्मी का मैं नियमित पाठक हूँ। हर लेख परिवार और समाज के लिए विशेष प्रेरक व शिक्षाप्रद है। आपका सम्पादकीय लेख तो विशेष होता है। बड़ा ही मार्मिक व चिन्तनीय होता है। पूरी पत्रिका बार-बार पढ़ने को मन करता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि शांतिधर्मी इसी प्रकार जीवन विकास व समाज सुधार की जानकारियाँ देता रहे। धन्यवाद!

रावअवतार आर्य, पूर्व सरपंच
बालधन कलां, जिला रेवाड़ी-१२३४०१

सम्मान्य पाठक!

कई बार साधारण डाक से भेजी गई महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ हम तक नहीं पहुंच पाती हैं। आप अपनी सम्मतियाँ, सुझाव, प्रतिक्रियाएँ, आगामी कार्यक्रमों की सूचनाएँ ई मेल या व्हाट्स् एप अथवा पंजीकृत डाक से भेजें। शांतिधर्मी के वार्षिक व आजीवन सदस्यता शुल्क में रजिस्टरी का खर्च शामिल नहीं है। यदि आप अपनी पत्रिका पंजीकृत डाक से मंगाना चाहते हैं तो एक वर्ष के लिये २५०/- अतिरिक्त जोड़कर शुल्क जमा करायें। जहाँ १० या अधिक ग्राहक एक स्थान पर रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका मंगाते हैं, उनका रजिस्टरी खर्च हम वहन करते हैं। आप सहयोग बनाये रखेंगे, प्रार्थना है।

व्हाट्स् एप नम्बर : 99963 38552
Email- shantidharmijind@gmail.com

अनुशीलन **सामवेद : आग्नेय पर्व**

आत्माहुति

-लेखकः पं॰ चमूपति

नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं धीमहे वयम्। सुवीरमग्न आहुत।।६।२६

ऋषिः- वशिष्ठः--सबसे अधिक वशी।

(नक्ष्य) हे प्राप्त करने योग्य, (आहुत) विश्व याग की आहुति बन चुके, (अग्ने) अग्रणी (विश्पते) प्रजाओं के पालक! (वयम्) हम (त्वा) तुझ (द्युमन्तम्) द्युलोक वाले (सुवीरम्) सच्चे वीर को (निधीमहे) (अपने यज्ञ का अगुआ) निश्चित करते हैं।

प्रजाओं का विकास तभी हो सकता है जब वे अपने आपको राष्ट्र के रूप में संघटित कर दें। वेद प्रजाओं को 'विशः' कहता है। 'विशः' वे हैं जो एक दूसरे में प्रविष्ट हो जाएँ--घुस जाएँ। कोई मनुष्य भी अपने आप में पूर्ण नहीं है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों पर, एक समुदाय दूसरे समुदायों पर पूर्ण-रूपेण आश्रित है। किसी भी प्रकार की उन्नति बिना पारस्परिक सहयोग के नहीं हो सकती। मनुष्य श्रेणियाँ बनाते हैं। एक ही धन्धा करने वाले, पूगों के रूप में संघटित हो जाते हैं। ऐसा करना उनके धंधे के हित में आवश्यक है। ये श्रेणियाँ अथवा पूग राष्ट्र के रूप में सम्मिलित हो जाते हैं। तमाशा यह है कि इन व्यक्तियों तथा पूगों के संघटन में अपनी पृथक्-पृथक् सत्ता रखने वाले कुछेक पदार्थों का केवल यान्त्रिक मेल ही नहीं हो जाता। इस सहयोग से एक सामूहिक व्यक्तित्व का उद्भव होता है। राष्ट्र की अपनी आत्मा है जो व्यक्तियों की आत्माओं से अभिन्न भी है और भिन्न भी। यज्ञ में जो पदार्थ डाल दिया जाए वह हव्य बन जाता है। वह जहाँ अपने आप एक विशेष उत्कर्ष को प्राप्त हो जाता है वहाँ अपने विशेष गुणों से यज्ञ की अग्नि को भी और अधिक समृद्ध कर देता है।

ऐसे ही जो व्यक्ति राष्ट्र की आग के साथ एकीभूत हो चुका है, जो सर्वात्मना इस यज्ञ की आहुति बन चुका है, उसमें और यज्ञ की आग में कोई भेद नहीं रहा। वह स्वयं यज्ञ की अग्नि है। उसके वैयक्तिक गुणों से यज्ञ की आग समृद्ध हुई है। राष्ट्र का अग्रणी वही हो सकता है। वह मानो प्रजा में प्रविष्ट हो चुका है और प्रजा उसमें। प्रजा के हित के सिवाय उसका अपना हित कुछ नहीं रहा। वही प्रजाओं का सच्चा पालक हो सकता है। कोई प्रजाओं में घुस कर ही प्रजाओं का पति बन सकता है।

ऐसे वीर पुरुष, जिसकी वीरता का उपयोग प्रजा के कल्याण ही के लिये होगा, जहाँ भी मिले प्राप्त करने योग्य है। प्रजाओं को सदा उस प्रजापति की शरण में जाना चाहिए और अपने कर्म की, ज्ञान की, धनधान्य की-सब विभूतियों की आहुति उसकी प्रदीप्त की हुई आग में डाल देनी चाहिये। उसे अपनी आहुतियों से आच्छादित कर देना चाहिये।

ऐसा मनुष्य देव है। उसने एक नये द्युलोक की सृष्टि की है। उसकी भावनाएँ पृथिवी तल पर बसने वाले सामान्य पुरुषों की-सी भावनाएँ नहीं है। उसने सबसे पूर्व अपनी आहुति दी है और अब अपने क्रियात्मक उदाहरण से प्रजा-जनों को भी आत्माहुति की शिक्षा दे रहा है। वह आहुति-स्वरूप है। सर्वस्व देकर भी वह देने से तृप्त नहीं हुआ। वह 'हुत' ही नहीं, 'आहुत' हो चुका है- सब ओर से दे दिया गया। उसका आत्म समर्पण पूर्णता को प्राप्त हो चुका है।

प्रजाजन स्वयं उसे प्रजापति बनाते हैं, केवल राजसिंहासन पर ही नहीं, हृदय-सिंहासन पर बैठा कर, प्रेम की, भक्ति की, श्रद्धा की उमड़ रही धाराओं से उसका अभिषेक करते हैं। यह अभिषेक भी वास्तव में यज्ञाग्नि का प्रदीपन है। दिलों के राजा को लोग दिलों ही में बैठाते हैं। पूजा राजा की करो या राज्यादर्श की, बात एक ही है। कोई राज राज्यादर्श के जितना अधिक निकट है, प्रजाओं की पूजा का वह उतना ही अधिक अधिकारी है। इस पूजा का तात्पर्य केवल मात्र यही है कि यज्ञाग्नि जलती रहे। राष्ट्र के रूप में विश्वयाग की आग प्रदीप्त रहे।

दिलों के राजा को लोग दिलों ही में बैठाते हैं। पूजा राजा की करो या राज्यादर्श की, बात एक ही है। कोई राज राज्यादर्श के जितना अधिक निकट है, प्रजाओं की पूजा का वह उतना ही अधिक अधिकारी है। इस पूजा का तात्पर्य केवल मात्र यही है कि यज्ञाग्नि जलती रहे। राष्ट्र के रूप में विश्वयाग की आग प्रदीप्त रहे।

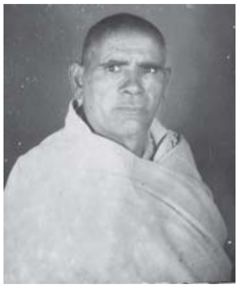

शांतिप्रवाह--- पुनर्प्रकाशन अक्तूबर २००३ अंक का सम्पादकीय

हठवाद का ताण्डव

❒स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्योपदेशक, संस्थापक शांतिधर्मी

उदारता, निष्पक्षता, सदाशयता और सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझने की भावना का विकास तो वेद की शिक्षा अपनाने से ही होगा चाहे यह आज अपनाई जाए या पीढ़ियों तक लुटने-पिटने के पश्चात्।

दुराग्रह अहंकार की ही एक विकृति है। आज हमारे समाज के अधिकांश मुद्दे इसी अहंकारवाद के शिकार हैं। सच्चाई को अपनाने की बात तो बहुत बड़ी है, सच्चाई को स्वीकार करने के लिए भी बहुत बड़ा आत्मबल चाहिए। आज यही दुराग्रह मानवता के लिए अभिशाप बना हुआ है। कोई भी मानवता के हित की बात दुराग्रह के कारण उलझा दी जाती है। तात्कालिक लाभ का प्रलोभन मनुष्य या मनुष्य समुदायों को दिग्भ्रमित कर देता है, लेकिन वर्तमान में तो बड़ी विचित्र स्थितियाँ सामने आ रही हैं। एक छोटे से फोड़े या फुंसी के इलाज के लिए शरीर के अंग हाथ, पाँव काटने की प्रवृत्ति जारी है।

गौहत्या बंदी का मामला कुछ ऐसा ही मामला है। गौहत्या बंदी विधेयक पर सरकार की नीयत का उल्लेख करना मेरा विषय नहीं है। लेकिन इस सम्बन्ध में जो स्वर चारों ओर से उभरे, उनसे यही स्पष्ट होता है कि युग को हम कितना ही आधुनिक कहें- मानसिकता में कोई परिवर्तन नहीं आया है। पूर्वोत्तर में किसी समुदाय ने कहा कि यह हमारी धार्मिक भावनाओं पर ठेस है, क्योंकि यह हमारा भोजन है। - किसी निरीह गरीब प्राणी को मारना या मरवाना ही आपकी धार्मिक भावना है! इस धार्मिक भावना को जलाकर समुद्र में क्यों नहीं फैंक देते।

कुछ बंधु इसका विरोध केवल इसलिए करते हैं क्योंकि वे मांसाहारी हैं और उनमें यह स्वीकार करने की हिम्मत नहीं है कि वे गलत कर रहे हैं। जब हम वेद के अनुयायियों के मांस न खाने की बात करते हैं तो वेद व उपनिषदों से मांस खाने के प्रमाण जुटा देते हैं।

जब इतिहास की पुस्तकों से यह हटाया जाता है कि 'आर्य मांस खाते थे' तब वे शोर मचाते हैं। क्योंकि अगर यह सत्य प्रसारित हो गया कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है तो स्वार्थी लोगों की सब दुकानदारियाँ बंद हो जाएँगी। लेकिन दूसरी ओर जब राम मंदिर के नीचे खुदाई में पशुओं की हड्डियां मिलती हैं तो वे कहते हैं कि यहाँ तो मुस्लिम लोग रहते थे- क्योंकि वे माँस खाते थे। हिन्दू तो माँस खाते ही नहीं थे।

यही दुराग्रह व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में दनदना रहा है। पिछले दिनों एक संस्था द्वारा एक अध्ययन किया गया। उसने कुछ लोगों को एक जुए जैसा खेल खिलाया। उन्हें अलग-अलग कक्षों में बैठाकर उनकी पहचान गुप्त रखी गई थी। उन्हें एक मौका ऐसा दिया गया कि वे अपने अधिक पैसे लगाकर दूसरों का थोड़ा नुकसान कर सकते थे। अधिकांश लोगों ने अपनी राशि गंवाकर दूसरों का नुकसान करने को प्राथमिकता दी। वास्तव में यह एक सच्चाई है कि आज परिवार में, समाज में, व्यक्ति में, राजनीति में यही प्रवृत्ति हावी है। यद्यपि यह एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है और अच्छाई बुराई कम या ज्यादा संसार में सदा से रहती आई है-लेकिन आज यह कुछ ज्यादा ही दिखाई देती है।

धार्मिक मनुष्य निजी स्वार्थ देखते हुए परहित का भी ध्यान रखता है। देवता उसी को कहते हैं जो अपनी हानि करके भी दूसरों का भला करे। मानव स्वयं हित का भी ध्यान रखता है-पर दूसरों का भला सोचता है। लेकिन यह प्रवृत्ति राक्षसी है कि अपनी चाहे कितनी भी हानि क्यों न हो जाए दूसरे को लाभ नहीं होना चाहिए। इसका कारण है धार्मिक शिक्षा का अभाव। धार्मिक शिक्षा का मतलब यह नहीं है कि फलां मत की स्थापना किसने की या फलाँ मत की कितनी पुस्तकें हैं।

धार्मिक शिक्षा का मतलब है आचरण की शिक्षा। शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति के उपायों की शिक्षा। बाकि सब सामान्य सामाजिक ज्ञान तो हो सकता है धार्मिक शिक्षा नहीं। पर विडम्बना यह है कि यह विषय भी दुराग्रहवाद का शिकार है। व्यवस्था का प्रत्येक पात्र व्यवस्था को बिगाड़ने में यथाशक्ति लगा हुआ है और अपने आप को छोड़कर बाकी सबको दोषी बता रहा है।

उदारता, निष्पक्षता, सदाशयता और सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझने की भावना का विकास तो वेद की शिक्षा अपनाने से ही होगा चाहे यह आज अपनाई जाए या पीढ़ियों तक लुटने-पिटने के पश्चात्।

❒❒❒

प्रेरणा-पथ

प्रो० बलराज मधोक के पिता का प्रेरणादायक संस्मरण

नौकरी का त्याग

❑मनमोहन कुमार आर्य

प्रोफेसर बलराज मधोक के पिता का नाम श्री जगन्नाथ था। आप क्षत्रिय वर्ण के थे। आप आर्यसमाज, हजूरीबाग, श्रीनगर, कश्मीर के मंत्री रहे। देश की आजादी से पूर्व जिन दिनों आप युवा थे, आपने नौकरी के लिए डाकतार विभाग में इंस्पैक्टर के पद पर नियुक्ति के लिए आवेदन किया था। इस पद की लिखित परीक्षा में आप सफल हो गये थे और अब एक साक्षात्कार के बाद सफल होने पर आपको यह पद मिलना था। आपको साक्षात्कार के लिए बुलाया गया। आपका साक्षात्कार एक अंग्रेज अधिकारी ने लिया। साक्षात्कार में उसने आप से पूछा कि आप किस महापुरुष और ग्रन्थ को अपना आदर्श मानते हैं और आपकी विचारधारा क्या है? श्री जगन्नाथ जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मैं ऋषि दयानन्द जी और उनके ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को मानता हूं और मेरी विचारधारा आर्यसमाजी है।

आपका यह उत्तर सुनकर अंग्रेज अधिकारी ने सर्वथा योग्य होते हुए भी आपका चयन नहीं किया। कारण आपका ऋषि दयानन्द का अनुयायी होना और सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करना था। कारण का ज्ञान होने पर श्री जगन्नाथ जी ने निर्णय किया कि उन्हें जीवन में सरकारी नौकरी नहीं करनी है। यह संस्मरण श्री बलराज मधोक ने अपनी आत्मकथा में दिया है। आर्यों ने देश, धर्म और जाति की रक्षा के लिए अनगिनत बलिदान दिए, यह ऐतिहासिक सत्य है।

धर्ममयी माता रोशनी देवी का देहान्त

माता रोशनी देवी (धर्मपत्नी स्व० श्री चंद्रभानु आर्य, भजनोपदेशक, हिंदी सत्याग्रह जेल यात्री व संस्थापक शांतिधर्मी) का गत २४ जून को देहांत हो गया। वे ७४ वर्ष की थीं। माता जी को २००८ में मस्तिष्क आघात हुआ था। शारीरिक रूप से अधिकांश असमर्थ होते हुए भी माता जी की स्मृति और विचार शक्ति उत्तम थी। पिछले २ मास से स्वाभाविक क्षीणता की ओर बढ़ रही थी। २४ जून रविवार को अपराह्न २:३० बजे शांतचित्त प्राण त्याग दिए।

माताजी अत्यंत धार्मिक, सात्विक और ईश्वर भक्त थीं। स्व० पिताजी के प्रायः प्रचारार्थ बाहर रहने के कारण अपनी सन्तान को उत्तम धार्मिक संस्कार देना उन्हीं का महत्तर कार्य था। उन्होंने एक तपस्विनी का जीवन जीते हुए समस्त अभाव, संकटों का वीरता और धैर्य से सामना किया और सन्तान निर्मात्री के रूप में अपना जीवन धन्य किया।

माता जी का जन्म १९४४ में ग्राम सनपेढा सोनीपत में हुआ था। बाद में इनका परिवार ग्राम कैथ शाहपुर जिला पानीपत में निवास करने लगा। आपके पिता श्री मांगेराम वर्मा व माता श्रीमती पानपोरी देवी परम्परागत विचारों के अत्यंत धार्मिक दम्पती थे। इनके घर में ही मन्दिर था जिसमें प्रतिदिन दोनों समय सामूहिक आरती पूजा पाठ होता था। श्री मांगेराम साधु सेवा, तीर्थयात्रा, दान, परोपकार आदि में अत्यंत रूचि लेने वाले व्यक्ति थे। अपने माता पिता की सबसे बड़ी सन्तान रोशनी देवी पर इस धार्मिक वातावरण का प्रभाव पड़ा।

किशोरावस्था में ही आपका विवाह ग्राम लोहारी जिला करनाल (पानीपत) के श्री हरज्ञान सिंह के सुपुत्र श्री चन्द्रभान आर्य (भजनोपदेशक) के साथ हो गया। जल्दी ही आपने नये वातावरण में अपने आप को ढाल लिया। आप यज्ञ, सन्ध्या, अतिथि सेवा, वैदिक सत्संग व गोसेवा में विशेष रूचि लेती थी। जब तक शरीर में सामर्थ्य रही, माताजी ने घर में गौ रखी। अनेक वैदिक विद्वानों, साधु संन्यासियों उपदेशकों और कार्यकर्त्ताओं का घर आना जाना लगा रहता। आप पूरी श्रद्धा से उनकी भोजन व्यवस्था करती और अपने बच्चों के साथ उनसे सत्संग उपदेश ग्रहण करती थीं। इसी का प्रभाव रहा कि आपकी पांचों सन्तान- श्री रमेश चन्द्र आर्य, श्रीमती यशवन्ती आर्या (धर्मपत्नी श्री यज्ञदत्त आर्य सुपुत्र महाशय हरद्वारी लाल जी आर्य रोहतक) श्री सहदेव शास्त्री, श्री रवीन्द्र कुमार आर्य, श्रीमती उषा आर्या (धर्मपत्नी श्री नरेश कुमार सोनी, बिठमड़ा)- धार्मिक और आर्य समाज सेवी है

वे पिछले ७ सात वर्ष से शारीरिक रूप से सर्वथा असमर्थ थीं, पर मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ होते हुए पूरे परिवार का मार्गदर्शन कर रही थीं। २५ जून को जींद में पूर्ण वैदिक रीति से उनका अन्त्येष्टि संस्कार किया गया।

वेद प्रार्थना-मंत्र

अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवे दिवे ।
यशसं वीरवत्तमम्।। ऋग्वेद १/१/३३

शब्दार्थः- अग्निना=ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हुए, रयिम्= विद्या धनादि को, अश्नवत= प्राप्त करें जो, पोषमेव= पुष्टि करने वाला हो, दिवे दिवे=प्रत्येक दिन, यशसम्=यश को बढ़ाने वाला हो, वीरवत्तमम्= वीर, निर्भीक बनाने वाला हो।

काव्य भावार्थ

हे परम पिता! हे परमेश्वर! हे जग संचालक जगदीश्वर।
तेरा ध्यान करें तुझे याद करें, खो जायें तुझी में हे ईश्वर!!
तूने उत्पन्न किया हमको, जग जीवन का अधिकार दिया।
जड़ से जीवन से पोषण-हित, धन पाने का अधिकार दिया।।
संकल्प किया था वेद मार्ग जग में आकर अपनायेंगे।
सत्संग करेंगे स्वयं, जगत् को सत् की राह चलायेंगे।।
जग में आकर हम भूल गये हमें वेद मार्ग पर चलना है।
सत्पुरुषों के व्रत आचरणों को, जान उन्हीं पर चलना है।।
आचरण अप्रमाणिक अनादर्श, विपरीत वेद के अपनाये।
धन पाने हित क्या-क्या न किया, कहने में भी लज्जा आये।।
फँस गये जगत् की माया में, संसार का दोहन कर डाला।
धन दौलत से ऐश्वर्यों से, अपने जीवन को भर डाला।।
उपभोग्य भोग्य सब कुछ पाया, ऐश्वर्यों को भी अपनाया।
मन भर सब का उपभोग किया, पर चैन नहीं मन को आया।।
रजनी की नींद चैन दिन का, सब गँवा दिया तब होश हुआ।
इस पाने-लेने में प्रभुवर! है हमसे भारी दोष हुआ।।
हम वेद मार्ग को भूल गये, ऋषियों के बोल न अपनाये।
धन पाने हित छल कपट झूठ, हिंसा के मारग अपनाये।।
सब चैन गंवा कर हे ईश्वर! तेरे चरणों में आये हैं।
अपकर्मों से प्रभु हमें बचा, यह आशा लेकर आये हैं।।
आशीष हमें दो हे ईश्वर! सन्मार्ग सदा 'प्रत्यूष' चलें।
अपकर्म सभी हों दूर प्रभु, जीवन के सारे दोष टलें।।

सेवाराम गुप्ता 'प्रत्यूष'
सी/686, शारदा सदन, अर्बुदानगर
ओढ़व, अहमदाबाद-382415
मो॰ 8401894625

विश्व पर्यावरण दिवस पर विशेष -

पर्यावरण बचाना है

❒**विमलेश बंसल 'आर्या'** 8130586002

पर्यावरण बचाना है तो,
घर घर यज्ञ रचाना होगा।
विमल वेद अपनाना होगा।
जलवायु शुद्ध बनाना होगा।।

घर से लेकर चौराहों,
चौराहों से पार्कों तक यज्ञ।
प्रति व्यक्ति यह ठान ले मन में,
कर्तव्य यह करना विश्व को स्वच्छ।

पर्यावरण बचेगा तब ही,
यज्ञों को प्रथम बचाना होगा।
पर्यावरण बचाना है तो----

पर्यावरण बचाने के,
पीछे हैं और भी कई कारक।
गायत्री, गौ, गंगाजल,
हरियाली वृक्ष परिधि धारक।

संरक्षण और संवर्धन हित,
इनको बहु फैलाना होगा।
पर्यावरण-----

बड़ी गाड़ियां भरे रसायन,
कारखाने चिमनी धुआँ।
जंगल कट कर बने कोठियां,
नदियों पर बांध बंधे बंधुआ।

अपनी कुछ आवश्यकताएँ,
जिन पर कुछ रोक लगाना होगा
पर्यावरण बचाना है तो-----

वृक्ष लगाना यज्ञ रचाना,
जलवायु को शुद्ध बनाना।
गौ गोबर उर्वरक खाद से,
सारी पृथ्वी को महकाना।
विमल वेद की बात मान यह,
ओजोन परत (उल्ब-वैदिक नाम) बचाना होगा।।
पर्यावरण-------

Vimleshansalarya69@gmail-com
329 द्वितीय तल, संत नगर पूर्वी कैलाश,
नई दिल्ली-११००६५

अमरीकी शासन की विशेष बातें

❑कृष्णचन्द्र गर्ग 831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा 0172-4010679

अमेरिका की व्यवस्था, समृद्धि व व्यक्तिगत स्वतंत्रता का श्रेय संविधान को तथा उसके निर्माताओं को ही जाता है।

१- अमेरिका में देश के लिए राष्ट्रपति, प्रान्त के लिए राज्यपाल तथा नगर के लिए नगरपालिका अध्यक्ष- ये सभी सीधे जनता के द्वारा चुने जाते हैं। इसलिए सांसदों को, विधायकों को और पार्षदों को चुनावों के पश्चात् आपसी गठजोड़ करने की या खरीद-बेच करने की जरूरत नहीं पड़ती।

२- विधायिका (Legislative) व कार्यपालिका (Executive) अलग अलग हैं। संसद विधायिका का काम करती है और राष्ट्रपति के ऊपर कार्यपालिका की जिम्मेदारी है।

३- संसद के दो सदन हैं- सैनेट (Senate) और House of Representatives. सैनेट के १०० सदस्य हैं जो हर प्रांत से दो के हिसाब से हैं। House of Representatives के 435 सदस्य हैं। वे हर प्रांत से आबादी के हिसाब से कम या ज्यादा हैं।

४- सांसद और विधायक- मंत्री, मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री नहीं बनाए जाते और न ही उन्हें कोई और लाभ का पद दिया जाता है। वे सांसद और विधायक ही बने रहते हैं। इसलिए उनका सम्बंध सीधा जनता से रहता है और वे जनता के लिए अच्छी व्यवस्थाएं बनाते हैं।

५- प्रशासन में राष्ट्रपति के सहायक के रूप में सचिव (Secretaries) हैं जिनकी संख्या १०-१२ निश्चित है। राष्ट्रपति सारे देश में से योग्यता के आधार पर सचिवों का चयन करते हैं। उनकी स्वीकृति सैनेट (ससंद का एक सदन) देती है।

६- अपने स्वार्थ के लिए कोई भी चुनाव आगे पीछे नहीं कर सकता। राष्ट्रपति और संसद के चुनावों की तिथियां संविधान के द्वारा ही निश्चित की हुई हैं।

७- अवधि (Term)- राष्ट्रपति की अवधि चार वर्ष है। कोई भी व्यक्ति दो से अधिक बार राष्ट्रपति नहीं बन सकता। संसद के एक सदन House of Representatives की अवधि दो वर्ष है तथा दूसरे सदन सैनेट (Senate) की अवधि छह वर्ष है। हर दो वर्ष के पश्चात सैनेट के एक तिहाई सदस्य नये चुनकर आते हैं।

८- उप-चुनाव (Bye Elections) नहीं होते। राष्ट्रपति का पद खाली होने पर अगले चुनाव तक के लिए उपराष्ट्रपति को राष्ट्रपति बना दिया जाता है। उपराष्ट्रपति का पद खाली होने पर संसद की स्वीकृति से राष्ट्रपति देश में से किसी भी योग्य व्यक्ति को अगले चुनाव तक के लिए उपराष्ट्रपति बना देते हैं। राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति का चुनाव एक जोड़े (Team) के तौर पर होता है, अलग अलग नहीं। संसद का कोई स्थान खाली होने पर उसी निर्वाचन क्षेत्र (Constituency) का और उसी राजनैतिक दल का कोई व्यक्ति अगले चुनाव तक के लिए मनोनीत कर दिया जाता है। संसद भी कभी भी बीच में ही भंग नहीं होती। संसद का अस्तित्त्व किसी प्रस्ताव के पास या फेल होने पर आश्रित नहीं है। इसलिए मध्यावधि चुनाव भी नहीं होते।

९- सांसद या राष्ट्रपति अपने वेतन-भत्ते स्वयं नहीं बढ़ा सकते। इसका जब कोई प्रस्ताव पास होता है वह उस समय के सांसदों या राष्ट्रपति पर लागू नहीं होता। उनकी अवधि पूरी होने पर अगली संसद या राष्ट्रपति पर लागू होता है।

१०- न्यायपालिका- पूर्ण रूप से स्वतन्त्र तथा निष्पक्ष है। बड़े मामलों का फैसला आम जनता में से चुने गए १२ लोगों की ज्यूरी (Jury) के द्वारा सर्वसम्मति से किया जाता है। उच्चतम न्यायालय (Supreme Court) में ९ जज हैं। उनकी नियुक्ति आयुभर के लिए होती है। कोई स्थान खाली होने पर राष्ट्रपति किसी व्यक्ति को मनोनीत (Nominate) करते हैं। सैनेट की बहुमत से स्वीकृति के बाद ही वह व्यक्ति उच्चतम न्यायालय का जज बन पाता है।
उच्चतम न्यायालय के पास जो भी मामला आता है उसके लिए सभी ९ जज बैठते हैं और बहुमत से फैसला करते हैं।

११- देश में कोई भी दिखावे का पद (Ceremonial Office) नहीं है। सभी के लिए पद के हिसाब से काम है तथा उसी हिसाब से वेतन है।

१२- चुनाव के लिए टिकट- कोई भी राजनैतिक दल किसी को भी चुनाव लड़ने के लिए टिकट नहीं देता। सभी को उम्मीदवारी टिकट जनता में स्वयं लेना होता है। प्राईमरी (Primary) चुनाव के द्वारा जनता जिसे ठीक समझती है उसे अधिक वोट देकर अपना उम्मीदवार बनाती है। इसीलिए किसी पार्टी का टिकट न मिलने पर कोई व्यक्ति पार्टी नहीं बदलता। वहां पर किसी भी व्यक्ति द्वारा पार्टी बदलना लगभग न के बराबर है।

१३- मन्त्रियों के कोटे या सांसद निधि आदि नहीं हैं। सांसदों, सचिवों, जजों, सरकारी अफसरों आदि को सरकार की तरफ से कार, कोठी, नौकर आदि भी नहीं दिए जाते।

१४- साम्प्रदायिकता- किसी भी मजहब के आधार पर देश में कोई भी कानून नहीं है। सभी कानून समता के आधार पर बने हैं। मजहब सभी के लिए एक निजी और व्यक्तिगत विषय है, राष्ट्रीय या सरकारी विषय नहीं है। किसी भी मजहब को बढ़ावा नहीं दिया जाता। इसलिए साम्प्रदायिक दंगे नहीं होते। किसी भी मजहब को लाऊड स्पीकर सार्वजनिक स्थानों पर लगाने की इजाजत नहीं है। वहां पर हज यात्रा के लिए सब्सिडी नहीं दी जाती। ट्रिपल तलाक आदि की समस्याएं वहां नहीं हैं।

१५- जातपात ऊँच-नीच का नामोनिशान नहीं है।

१६- कोई भी किसी प्रकार का भी आरक्षण नहीं है। सब योग्यता के आधार पर है। जो जिसके योग्य है उसे वह काम मिलता है। योग्यता के लिए सभी को अवसर उपलब्ध हैं।

१७- शिक्षा- हाई स्कूल अर्थात १२ वर्ष तक की शिक्षा पूर्णतया निशुल्क है और दस वर्ष तक की शिक्षा सभी लड़के-लड़कियों के लिए अनिवार्य है। आरम्भ से अन्त तक की सारी शिक्षा में अध्यापक ही परीक्षक होता है। जो अध्यापक पढ़ाता है वही परीक्षा पत्र तैयार करता है और वही उन्हें जांचता है, वही विद्यार्थियों को ग्रेड देता है और उन्हें पास फेल करता है। दसवीं तक की शिक्षा अनिवार्य होने से देश की जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण रहता है क्योंकि पढ़े लिखे लोगों के बच्चे कम होते हैं। इससे बेरोजगारी पर नियन्त्रण लगता है, बाल विवाह और बाल मजदूर नहीं होते। लगभग सभी स्कूल स्थानीय सरकारों के अधीन होते हैं। प्राईवेट स्कूल तो कोई बिरला ही होता है। सरकारी स्कूलों का स्तर (standard) बड़ा ऊँचा है।

१८- नौकरी की सुरक्षा (Security of Service) नहीं है। इसलिए लोग मेहनत और ईमानदारी से काम करते हैं। रोटी की सुरक्षा (Security of Bread) सबके लिए है।

१९- भाषा- अमेरिका में सैंकड़ों भाषाएं बोलने वाले लोग रहते हैं। परन्तु केन्द्र सरकार तथा सभी प्रान्तीय सरकारों की भाषा एक ही है- अंग्रेजी। इसलिए सारा देश एक इकाई के रूप में उभरा है।

२०- मेहनत करने वाला कोई भी व्यक्ति गरीब नहीं है। मेहनत से कोई भी व्यक्ति थोड़े ही समय में अपनी गरीबी दूर कर सकता है। शारीरिक काम करने वालों को मेहनताना दफ्तरों में काम करने वालों से कम नहीं मिलता।

२१- राजनेताओं के पास कोई व्यक्तिगत अधिकार नहीं होते। इसलिए लोग उनके आगे पीछे नहीं फिरते। वैसे भी खुशामद करना या गिड़गिड़ाना बहुत बुरा माना जाता है। दफ्तरों में भी गिड़गिड़ाना नहीं पड़ता।

२२- मुद्रा- अमेरिका में स्थिरता इतनी है कि पिछले पचास वर्षों में वहां की करंसी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। आज भी वही नोट और वही सिक्के हैं जो पचास वर्ष पहले थे। एक और विशेष बात- वहां के हर सिक्के पर लिखा रहता है- In God We Trust. अर्थात हमें ईश्वर में विश्वास है।

२३- अर्थ व्यवस्था का आधार- निजी क्षेत्र (Private Sector) है। बस, रेल, हवाई जहाज, टैलिफोन, टैलिविजन, रेडियो, समाचार पत्र, बिजली, पानी, बैंक, बीमा- सभी जनता के हाथों में हैं। स्कूल और पुलिस स्थानीय सरकारों के पास हैं। पोस्ट ऑफिस केन्द्रीय सरकार के पास है। इण्लैण्ड के पूर्व प्रधानमंत्री बड़े राजनीतिज्ञ विंसटन चर्चल (Winston Churchill) ने कहा था- Destroy free market, you create black market. अर्थात स्वतन्त्र बाजार समाप्त करने का मतलब है काला बाजार पैदा करना।

२४- अमेरिका में कार्यकुशलता के कारण-

(a) कोई आरक्षण नहीं, नौकरियां योग्यता के आधार पर हैं।

(b) नौकरी की सुरक्षा नहीं, परन्तु रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा की सुरक्षा सबके लिए है।

(c) सम्मिलित जिम्मेदारी (Collective Responsibility) का सिद्धान्त अमेरिका में नहीं चलता, प्रत्येक व्यक्ति की अपनी जिम्मेदारी है।

(d) अर्थव्यवस्था का आधार निजी क्षेत्र (Private Sector)

२५- अमरीकी समाज के गुण-

(a) Rule of Law- कानून का राज

(b) Dignity of Labour- मेहनत का सम्मान

(c) Discipline - अनुशासन

(d) Punctuality- समय के पाबन्द

(e) No Adulteration- कोई मिलावट नहीं

(f) Sense of Cleanliness- सफाई की समझ

(g) Politeness- नम्रता

२६- अमरीकी संविधान - अमेरिका का संविधान 1787 में बना था। उसमें अब तक कुल 27 संशोधन हुए हैं। मूल संविधान तथा सभी संशोधनों को मिलाकर कुल पच्चीस पृष्ठ की पुस्तिका के आकार का अमेरिका का संविधान है। भारत का संविधान उससे बीस गुणा बड़ा है। उसमें एक सौ से अधिक संशोधन हो चुके हैं।

अमेरिका की सुव्यवस्था, समृद्धि, उन्नति और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का श्रेय उनके 231 वर्ष पुराने संविधान को तथा उसे बनाने वालों को ही जाता है।

दिव्य मातृत्त्व से ही दिव्य सन्तान

❐डॉ० अर्चना प्रिय आर्या (संस्थापिका एवं अध्यक्षा : संस्कार जागृति मिशन)
५२, ताराधाम क0लोनी, टाउनशिप (मथुरा) 09719910557, 09719601088

हर महान व्यक्तित्व के पीछे एक माँ छिपी है और छिपा है उसका ममत्व। श्रेष्ठ सन्तति के निर्माण हेतु माता का संस्कारित होना देश की आवश्यकता है। इसलिए आज बालिकाओं की शिक्षा किस प्रकार की हो, यह विचार होना चाहिए। उसके मन में स्त्रीत्व के प्रति हीन भावना न हो। उसे अपने नारी होने पर गर्व हो तथा वह स्वयं कन्या के प्रति जाग्रत हुई अनवस्था को दूर कर उसमें भावी माता के संस्कारों को भरने के प्रति सजग बने।

पुत्र का निर्माण करने के कारण ही नारी की संज्ञा माता है। जननी तो हर स्त्री होती है परन्तु माँ के विषय में कहा जाता है- 'जो करे पुत्र निर्माण माता सोई' और इसीलिए महर्षि मनु ने माँ को दस सहस्र आचार्यों के समान कहा है-
उपाध्यायान् दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।
सहस्रं तु पितृन माता गौरवेणातिरिच्यते।।

माँ सन्तान के नाम पर कूड़ा, कचरा पैदा कर धरती माँ का बोझ नहीं बढ़ाती थी, बल्कि ऐसी चरित्रवान, जितेन्द्रिय, वीर बहादुर व शक्तिशाली सन्तान का निर्माण करती थी जो भारत माँ के दर्द को दूर करने वाली होती थी। क्योंकि 'वीरभोग्या वसुन्धरा' अर्थात् यह भूमि वीरों के लिए है, कायर व कमजोर लोगों के लिए नहीं है। यही कारण था कि पहले यदि नारी अपने को निर्दोष प्रस्तुत करती थी तो इस बात की शपथ लेती थी। कहते हैं कि सप्तमहर्षि माता अरुन्धती सहित यात्रा कर रहे थे। मार्ग में किसी वस्तु की चोरी हो गई। प्रत्येक अपनी सफाई देने लगा। माता अरुन्धती कहती हैं- 'जो पाप अयोग्य और दुर्बल सन्तान उत्पन्न करने का होता है वह पाप मुझे लगे, यदि मैंने चोरी की हो।' यहाँ स्पष्ट है कि प्राचीन माताएँ अयोग्य और दुर्बल सन्तान पैदा करना महापाप समझती थीं।

योगीराज श्रीकृष्ण की वीरता, शौर्य, राजनैतिकता, प्रभुभक्ति, गोमाता प्रेम, सेवा भाव और धर्मशीलता से आप परिचित हैं, परन्तु इसका मूल भी आपको माता देवकी के अनुपम धैर्य, कष्टसहिष्णुता, रूप, तप, वीरता, ईश्वर प्रेम और माता यशोदा की लोरियों में देखना होगा। छत्रपति शिवाजी को सिंहगढ़ विजय की प्रेरणा करने वाली माता जीजाबाई थी। 'सिंहगढ़ विजय करो बेटा भगवा ध्वज चलकर फैराओ।' भक्त ध्रुव का निर्माण करने वाली माता सुनीति थी। हनुमान का निर्माण अंजना ने किया, भीष्म पितामह की व्रतनिष्ठा का मूल उनकी माता गंगा की व्रतसाधना में छिपा है। आल्हा ऊदल की वीरता का रहस्य माता देवलीदेवी की शिक्षायें हैं। गोरा-बादल की प्राण संचारी शक्ति माता जवाहरबाई और हताश पुत्र संजय को धिक्कारते हुए पुनः कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ करने वाली वीर माता मदालसा के उदाहरण में सर्वाधिक स्पष्ट हुआ है। वे अपने तीनों पुत्रों विक्रान्त, सुबाहु एवं शत्रुमर्दन को शुद्धोऽसि, बुद्धोऽसि, निरंजनोऽसि! संसार माया परिवर्जितोऽसि!! का उपदेश करके विरक्त बना देती हैं। चौथे पुत्र अलर्क को भी जब यही उपदेश करने लगीं तो राजा चिन्तित होकर कहते हैं- 'देवि! इसे भी विरक्त बनाकर मेरी वंश परम्परा उच्छेद करने पर क्यों तुली हो? इसे प्रवृत्ति मार्ग में लगाओ और उसके अनुकूल ही उपदेश दो।' मदालसा ने पति की आज्ञा मान ली और अलर्क को बचपन में ही व्यवहार-शास्त्र का पण्डित बना दिया। उसे राजनीति का पूर्ण ज्ञान कराया। धर्म, अर्थ और काम तीनों शास्त्रों में वह प्रवीण बन गया। बड़े होने पर माता-पिता ने अलर्क को राजगद्दी पर बिठाया और स्वयं वन में तपस्या करने के लिए चले गये। किसी कवि की पंक्तियाँ प्रसंगवश पठनीय हैं-

माता के सिखाये पुत्र कायर और क्रूर होत।
माता के सिखाये पुत्र दाता और शूर है।।
माता के सिखाये पुत्र ब्रह्मचारी बलवान होत।
माता के सिखाये पुत्र जग में मशहूर है।।

हमारी मातायें, बहिनें आज भी महर्षि दयानन्द, सुभाष चन्द्र बोस, सरदार बल्लभभाई पटेल, सरदार भगत सिंह, लाल बहादुर शास्त्री सरीखे लालों का निर्माण करके अपने महान राष्ट्र को फिर जगद्गुरु बनाने में योगदान दे सकती हैं। इसके लिए उन्हें सन्तति निर्माण के रहस्य को समझना होगा। गर्भाधान से लेकर उपनयन संस्कार तक इसी विज्ञान का शिक्षण है। मनुस्मृति आदि धर्म शास्त्रों में भी इसके लिए आवश्यक विधान हैं। गर्भाधान प्रक्रिया के

पीछे एक स्वस्थ्य कल्पना और उत्कृष्ट भावना, रहन-सहन, किस प्रकार के चित्रों का अवलोकन, किस प्रकार के ग्रन्थों का अध्ययन, बालक को किस-किसी प्रकार की लोरियाँ, किस प्रकार की कहानियाँ, कवितायें, गीत कण्ठस्थ कराना, कैसी स्त्रियों का साथ, किस प्रकार का शिष्टाचार आदि सन्तति निर्माण विज्ञान के अनेक विभाग हैं।

खेत में उत्तम फसल प्राप्त करने के लिए बीज डालने के पूर्व खेत को तैयार करना होता है। माँ ही वह खेत है। 'माता निर्माता भवति' माँ ही निर्मात्री शक्ति है। मातायें ही किसी राष्ट्र और जन-जीवन की आधार शिला हैं परन्तु अपनी मनोभूमि को ऐसा बनाने के लिए, मानव जीवन के महत्व, ईश्वर भक्ति और मातृभूमि भक्ति के रहस्य को जानना चाहिये। साथ ही इस युग के महिमामय क्रान्तिदर्शी ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित सोलह संस्कारों की वैदिक विधि के महत्त्व और प्रक्रिया को समझना आवश्यक है।

आज के युग की सबसे बड़ी समस्या है- मानवता से युक्त सच्चे मानव का अकाल। आज यही समझना है कि आदर्श मानवों के इस अकाल को पुरुष नहीं, स्त्रियाँ ही दूर कर सकती हैं क्योंकि स्त्री का वास्तविक स्वरूप माता का है और 'माता निर्माता भवति' माता ही राष्ट्र और जीवन की निर्मात्री शक्ति है। 'मातृमान्-पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद' शतपथ ब्राह्मण का यह वचन है। जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवें तभी मनुष्य ज्ञानवान बनता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखा है कि वह सन्तान बड़ी भाग्यवान है जिसके माता-पिता धार्मिक, विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है उतना किसी से नहीं। जितना माता सन्तानों पर प्रेम और उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिए 'प्रशस्ता धार्मिकी माता यस्य स मातृमान्' धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक शिक्षा पूरी न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।

रामप्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर की जेल में ब्रिटिश राज्य को उखाड़ने के प्रयत्न में फाँसी की सजा घोषित की जा चुकी थी। भारत के गवर्नर जनरल से क्षमा माँग लेने और भविष्य में वैसा न करने का आश्वासन देने पर फाँसी से छुटकारा मिलने की संभावना थी। रामप्रसाद बिस्मिल की फाँसी से एक दिन पूर्व उनके पिता उससे मिलने आये और पुत्र-प्रेम से विह्वल हो क्षमा माँगने और भविष्य में स्वतन्त्रता संग्राम में न कूदने की मार्मिक अपील की। लेकिन एक आर्य वीर को मृत्यु भयभीत नहीं कर सकती। स्वामी दयानन्द के अनुयायी बिस्मिल के लिए मृत्यु कोई भयावह वस्तु नहीं थी। मृत्यु का अर्थ उसकी दृष्टि में था- माँ की गोद में सो जाना। छोटा बच्चा दिन भर खिलखिलाता है, हँसता है, रोता है, गिरता है और रात्रि होते ही माँ उसे उठा लेती है। यही हाल जीव का है।

संसार से जीव को मृत्यु माता उठा लेती है। मृत्यु मानो महामाया है, महाप्रस्थान है, मृत्यु महा निद्रा है, मृत्यु मानो शान्ति है, मृत्यु मानो नवजीवन का आरम्भ है, मृत्यु मानो आनन्द का दर्शन है, मृत्यु मानो पर्व है, मृत्यु मानो प्रियतम के पास जाना है। तब भला यह मृत्यु रामप्रसाद बिस्मिल को कैसे भयभीत कर सकती थी। उसने पिता की प्रार्थना अस्वीकार कर दी। कुछ समय पश्चात् उसकी माँ पहुँची। माँ के पहुँचते ही बिस्मिल ने रोना शुरू कर दिया माँ के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। माँ ने बेटे को फटकारते हुये कहा कि जब मरने से इतना ही डर लगता था तो इस मार्ग को क्यों चुना? माँ के इन वचनों को सुनकर बिस्मिल अपनी आँखों से आँसू पोंछते हुये बोला- माँ! मैं मृत्यु से डरकर नहीं रो रहा हूँ। मौत का मुझे कोई गम नहीं है परन्तु मैं तो इसलिए रो रहा हूँ कि मरने के बाद मुझे तुझ जैसी बहादुर माँ की गोद कहाँ मिलेगी?

वास्तव में माताओं ने अपने हृदय के तीव्र वेगों से जो चमत्कार किये हैं, उनके अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। माता कौशल्या, माता अंजना, माता मदालसा, माता देवकी, माता यशोदा, जीजाबाई आदि के शत सहस्र उदाहरण हैं। जिन्होंने सन्तान निर्माण का आदर्श प्रस्तुत कर धन्यता और अमरता प्राप्त की है।

नारी नर का निर्माण करे।
मनु, व्यास, कृष्ण, राम जैसे पुत्रों को जने।
नारी गुण का आधान करे, प्रताप, शिवा, गोविन्द बने।

महाभारत का उदाहरण हमारे सामने है। वीर अभिमन्यु की माँ सुभद्रा अपने पति अर्जुन से चक्रव्यूह भेदन का ज्ञान प्राप्त करते-करते सो गई। परिणामतः बालक अभिमन्यु का शिक्षण अधूरा रहा और वह चक्रव्यूह से बाहर न निकल सकने के कारण पराजित हुआ। इतिहास साक्षी है कि शिवाजी महाराज को राजमाता जीजाबाई ने गर्भकाल से ही शिक्षण दिया था। उनका उद्देश्य था कि वह बालक गो-ब्राह्मण प्रतिपालक एवं हिन्दू राष्ट्र का पुनरुत्थान करने वाला बने। इसलिए उन्होंने बालक शिवाजी के चरित्र का निर्माण करने वाला संस्कारप्रद वातावरण गर्भकाल से ही उपलब्ध कराया। संत ज्ञानेश्वर की माँ ने भी अनेक कष्ट सहकर राष्ट्रीय स्वाभिमान का एवं भक्ति से परिपूर्ण बालक का निर्माण किया और समाज हिताय समर्पित कर

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

गृहस्थो! सुखी होने की कला सीखो

❑**देवराज आर्य,** से०नि० अध्यापक, रोहतक मार्ग, जीन्द

मनु महाराज ने गृहस्थ आश्रम को 'ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ' लिखा है। शेष तीनों आश्रमों को अन्नादि दान देकर गृहस्थ ही धारण करता है, इससे गृहस्थ ज्येष्ठाश्रम कहाता है।

जब यह आश्रम सबसे अच्छा और उत्तम है तो फिर इसमें दु:ख क्यों है, इसे दु:ख का सागर क्यों कहा जाने लगा है? कई बार जब गृहस्थों से मैं यह प्रश्न पूछता हूँ कि चारों आश्रमों में सबसे दु:खी कौन है? तो वे झटपट उत्तर देते हैं कि गृहस्थ ही सबसे अधिक दु:खी हैं। वास्तव में बात यह है कि हमने गृहस्थाश्रम के नियमों का पालन करना बंद कर दिया। अपने कर्त्तव्य और धर्मपालन को भूल गये, अधर्म के मार्ग पर चलना आरम्भ कर दिया। आप सबको पता है कि अधर्म और पाप का फल दु:ख होता है।

पञ्चमहायज्ञों का विधान-

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलि र्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।। मनु० ३/७०

(अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः) वेद और धर्मशास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना, सन्ध्योपासन करना अर्थात् ओं तथा गायत्री मंत्र का उच्चारण, अर्थज्ञान और उसके अनुसार अपने चाल-चलन को करना 'ब्रह्मयज्ञ' कहलाता है। (तु) और (तर्पणं पितृयज्ञः) माता-पिता आदि जीवित पितरों की सेवा-सुश्रूषा तथा भोजन आदि से तृप्ति करना पितृयज्ञ है। (होमः दैवः) प्रातः सायं हवन करना 'देवयज्ञ' है। (बलिः भौतः) कीटों, पक्षियों, कुत्तों, कुष्ठी व्यक्तियों तथा आश्रितों को भोजन का कुछ भाग देना 'भूतयज्ञ' या 'बलिवैश्वदेव यज्ञ' कहलाता है। (अतिथि पूजनम्) अतिथियों को भोजन देना और सेवा-सत्कार करना 'नृयज्ञ' अथवा अतिथियज्ञ कहाता है। जो इन पांच दैनिक महायज्ञों को नहीं करता वह व्यक्ति पापी है, सांस लेते हुए भी वह व्यक्ति नहीं जीता।

माता-पिता और पुत्र का व्यवहार-

पुनरासद्य सदनमपश्च पृथिवीमग्ने। शैषे मातुर्यथोपस्थेऽन्तर स्याम् शिवतमः। यजु० १२/३९

हे (अग्ने) इच्छा आदि गुणों से प्रकाशित जन! जिस कारण तू (अपः) जलों (च) और (पृथिवीम्) भूमितल के (सदनम्) स्थान को (पुनः) बार-बार (आसद्य) प्राप्त होके (अस्याम्) इस माता के (अन्तः) गर्भाशय में शिवतमः- मंगलकारी होके यथा-जैसे बालक मातुः-माता की गोद में शेषे- सोता है, वैसे ही माता की सेवा में मंगलकारी हो।

भावार्थ-पुत्रों को चाहिये कि जैसे माता अपने पुत्रों को सुख देती है, वैसे ही अनुकूल सेवा से अपनी माताओं को निरंतर आनन्दित करें और माता-पिता के साथ विरोध कभी न करें। माता-पिता को भी चाहिये कि अपने पुत्रों अर्थात् सन्तान को अधर्म और कुशिक्षा से युक्त कभी न करें। क्योंकि इस प्रकार किये बिना संतान धर्मात्मा नहीं हो सकते।

ओं भूर्भुवः स्वः। अधोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः। वीरसूर्देवृकामा स्योना शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।

ऋ० १०-८५-४४

'प्राणदाता, दु:ख-विनाशक, सब सुखों के दाता परमेश्वर, आपकी कृपा और उत्तम पुरुषार्थ से (हे वधू) तेरी दृष्टि कभी क्रूर न हो, तू प्रिय दृष्टि और मंगल करने हारी हो। तू पति के जीवन को बढ़ाने वाली हो, पशुओं के लिये भी सुखकारी हो। (सुवर्चाः) पवित्र अन्तःकरण युक्त, सदा प्रसन्नचित्त, तेज, कान्ति और शुभ गुण, कर्म स्वभाववाली हो। उत्तम वीर पुत्रों को जन्म देने वाली तथा परमेश्वर की भक्त हो, सबके लिए (स्योना) सुख देने वाली और परिवार में कल्याण लाने वाली हो। यही नहीं तू पशुओं के लिये भी कल्याणकारी हो।

धर्मशास्त्र में नारी का ऊँचा स्थान-

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः। मनु०

जिस घर में स्त्रियों का आदर होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं और जिस घर में स्त्रियों का सत्कार नहीं होता वहाँ सब क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं। मनु महाराज गृहस्थ को स्वर्ग बनाने के लिए नारी को पूज्य बताते हैं। नारी जाति को भी धर्मशास्त्र की शिक्षा को जीवन में धारण करते हुए एक आदर्श माता, बहिन व पत्नी बनने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए।

सुखी जीवन जीने की कला

संतुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्य्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याण तत्र वै ध्रुवम्।। मनु०

जिस कुल में स्त्री से पुरुष और पुरुष से स्त्री सदा प्रसन्न

रहती है, उसी कुल में आनन्द, लक्ष्मी और कीर्ति निवास करती है और जहाँ विरोध, कलह होता है, वहाँ दु:ख, दारिद्रय और निन्दा निवास करती है।

बिगाड़ का कारण

गृहस्थाश्रम तो लोक-परलोक दोनों को सुधारने का एक बड़ा उत्तम साधन है। परन्तु इसको मनुष्य ने अपने स्वार्थ, इन्द्रियलोलुपता, कुसङ्ग, भौतिक चकाचौंध तथा मूर्खता से बिगाड़ कर रख दिया है। यह आश्रम तो संसार के निर्माण एवं एक श्रेष्ठ पवित्र समाज की आधारशिला रखने की पृष्ठभूमि थी। इसको ही हमने अज्ञान एवं पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंग कर विषय वासना का केंद्र बना दिया। भूल गये हम अपने पूर्वजों की मर्यादा और पवित्र वेद शास्त्रों की शिक्षा! हमारे वैदिक गृहस्थों ने ही संसार को वेद शास्त्र, उपनिषद् और ब्राह्मण ग्रन्थों की शिक्षा का प्रचार प्रसार करने वाले ऋषि-महर्षि, विद्वान और मनीषी दिए जिन्होंने 'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्' के नारे को सार्थक करने पर बल दिया, ताकि विश्व के लोग शांति से रह सकें तथा अपने मानव धर्म के लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

वेद की घोषणा

वेद मानव के नव-निर्माण के लिए कितनी उच्च एवं पवित्र घोषणा करता है। आरम्भ के मंत्र में कहा गया है कि हे वधू- तू परिवार के लिए मंगलकारी हो, तेरा अन्त: करण पवित्र हो, तू वीर और धर्मात्मा सन्तान पैदा करने वाली हो, परमात्मा में तेरी गूढ़ आस्था हो तथा संसार के सभी जीवों के लिए सुखदायी हो। जब एक माता इन गुणों से अलंकृत होगी तो संसार स्वर्ग बन जाएगा। अब आप विचार करें क्या हम अपने गृहस्थ आश्रम को इतना पवित्र और महान बनाने का कभी प्रयत्न करते हैं? यदि नहीं तो फिर गृहस्थ कैसे उत्तम ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और संन्यासी इस संसार को दे सकेगा जो 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' के नारे को सार्थक कर सकेंगे!

पाप का फल दु:ख

आज आर्य सन्तान अपने कर्त्तव्य कर्म को भूल गई। याद रख लेना जो अपने कर्त्तव्य अर्थात् कर्म को त्याग देता है तो धर्म भी उसे त्याग देता है। विचार करो हममें से कितने गृहस्थी प्रतिदिन पञ्च महायज्ञों को करते हैं, यदि हम इन यज्ञों का अनुष्ठान नहीं करते तो हम नास्तिक, कृतघ्न, दम्भी, छली, कपटी और महामूर्ख हैं। उस परमेश्वर की कृपा हमारे ऊपर कैसे होगी! पापी हमेशा दु:ख पाते हैं-

अधार्मिको नरो यो हि यस्य चाप्यनृतं धनम्।
हिंसारतश्च यो नित्यं नेहासौ सुखमेधते।। मनु० ४/१७०

जो अधार्मिक मनुष्य है और जिसका अधर्म से संचित किया हुआ धन है, जो नित्य वैर में प्रवृत्त रहता है, वह इस लोक और परलोक (परजन्म) में सुख को कभी प्राप्त नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द इस विषय में लिखते हैं- किया हुआ अधर्म निष्फल कभी नहीं होता परन्तु जिस समय अधर्म करता है, उसी समय फल भी नहीं होता, इसलिये अज्ञानी लोग अधर्म से नहीं डरते; तथापि निश्चय जानो कि वह अधर्माचरण धीरे-धीरे तुम्हारे सुख के मूलों को काटता चला जाता है। पश्चात् अधर्मी दु:ख ही दु:ख भोगता है। गृहस्थ लोगो! यदि आप सुखी होना चाहते हो तो पञ्चमहायज्ञ किया करो।

धर्म से सुख

ब्रह्मयज्ञ- उस ईश्वर की सत्ता को जानो और मानो, देवयज्ञ (हवन) से संसार का उपकार करो, पितृयज्ञ-जीवित पितरों अर्थात् दादा-दादी, माता-पिता और वृद्धों की सेवा करो। उनके उपकार का ऋण तो चुका दो तथा सभी प्राणियों पर दया करते हुए विद्वानों और ज्ञानियों से उत्तम व्यवहार और आचरण की शिक्षा ग्रहण करो फिर देखो गृहस्थ आश्रम कैसे सुख और समृद्धि का प्रतीक बनता है।

आज ईश्वर में आस्था नहीं, यज्ञ के प्रति श्रद्धा नहीं; माता, पिता और विद्वानों के प्रति हृदय में स्थान नहीं तो मन और आत्मा में शांति और बल कहाँ से आयेगा। यदि माता-पिता और वृद्धों-विद्वानों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धा नहीं, सेवा नहीं तो हम धनवान होते हुए भी निर्धन और विद्वान होते हुए भी अज्ञानी और मूढ़ हैं। ऐसे वातावरण में हम कभी सुखी नहीं हो सकते।

घर ही स्वर्ग घर ही नरक

अनुव्रत: पितु: पुत्रो मात्रा भवतु संमना:।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्।। अथर्व०

पुत्र पिता के व्रत को पूरा करने वाला हो। अर्थात् उसके अच्छे कामों का आगे बढ़ाकर उसकी अच्छी शिक्षा के अनुरूप चलने वाला हो। माता के मन को संतुष्ट करने वाला हो, पत्नी पति के साथ मीठा बोलने वाली हो तथा शान्तिप्रद वाणी बोलने वाली हो। इस पर विचार कर जीवन में धारण करें तो गृहस्थ सुखी ही नहीं सम्पन्न भी हो जायेगा।
स्वर्ग और नरक पर जरा दृष्टि डालें-

स्वर्ग- अन्न पुराणा घृत नया, घर सतवन्ती नार।
आंगन-आंगन बालक खेलें, स्वर्ग निशानी चार।।
नरक-रूखा भोजन सिर कर्ज, घर कलिहारी नार।
आये का स्वागत नहीं, नरक निशानी चार।।

आओ हम सभी वेद की शिक्षाओं पर चलकर गृहस्थ को सुख धाम बनाने का प्रयत्न करें। परमात्मा हमें इसके लिए शक्ति, भक्ति और श्रद्धा से भरपूर करें।

पुण्य तिथि १७ जून

वीर प्रसूता माता जीजाबाई

❑मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

प्रतिभाएँ न तो बनाई जाती हैं और न थोंपी जाती है, किंतु सूर्य-उदय के पूर्व उषःकाल की स्वर्णिम किरणों के समान उनका उदय होता है। सम्प्रति, इतिहासकारों से उपेक्षित, वीर प्रसूता माता जीजाबाई के विषय में न तो अधिक शोध किया गया और न प्रामाणिक कार्य-आलेख ही तैयार किया गया। यह कितने आश्चर्य की बात है कि माता जीजाबाई के वीर पुत्र शिवाजी पर मोटे-मोटे ग्रंथ लिखे गये, परंतु उनकी जन्मदात्री, पुण्यश्लोका माता जीजाबाई पर बहुत ही कम लिखा गया।

आधुनिक नेताओं का जन्म 'पेटी' (मत-पेटी) से होता है, जबकि महापुरुषों का जन्म उच्च सस्कार धारण करने वाली माताओं के पेट (गर्भ) से होता है। माता कौशल्या, माता देवकी, सती मदालसा से लेकर जीजा बाई, माता पुण्य श्लोका, अहिल्याबाई ने ही वीर पुत्रों को जन्म देकर उन्हें वीरोचित गुण और संस्कारों से पोषित किया और जाति, धर्म और देश सेवा हेतु समर्पित कर दिया।

वैसे तो सम्पूर्ण भारत भूमि ही वीर प्रसविनी रही है तथापि महाराष्ट्र ने अनेक प्रतिभाओं को जन्म देकर राष्ट्रोत्थान में महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया है। माता जीजाबाई ने शिवाजी को जन्म देकर देश का महान उपकार किया है।

महाराष्ट्र के निजाम शाह के दरबार में प्रभावशाली सरदार और सिंदखेड़ के जागीरदार लखुजीराव जाधव की पुत्री जीजाबाई के नाम से जानी-पहचानी गईं। माता जीजाबाई का जन्म सन् १२ जनवरी १५९८ में तथा देहावसान १७ जून १६७४ ई० में हुआ। जीजाबाई का विवाह छोटी आयु में ही शाहजी भोंसले से कर दिया गया। शहाजी कभी निजामशााह, कभी आदिलशाह और कभी मुगलों के दरबार में सरदार के रूप में सेवारत् रहे। जीजाबाई ने अपने काल में कुल छः सन्तानों को जन्म दिया। उनमें से केवल दो सन्तान ही जीवित रहीं। प्रथम उनका बड़ा पुत्र संभाजी और दूसरी सन्तान वीर शिवाजी। क्योंकि संभाजी से उसके पिता शहाजी अधिक प्रेम करते थे, इस कारण वह अपनी मां से दूर ही रहा।

विपत्तियों के काले बादल :-

कहा जाता है जब शिवाजी अपनी माता के गर्भ में ही थे, तभी दुःखों का घटना-चक्र तेजी से घूमने लगा। तीन माह की गर्भवती माता जीजाबाई को अपने पति और पुत्र संभाजी को छोड़कर अपने रिश्तेदार विश्वासराव के यहां जुन्नर में शरण लेनी पड़ी। इसी कालावधि में महाराष्ट्र में भीषण सूखा और अकाल पड़ा था। ऐसे ही संकट के समय में शहाजी की विद्रोह की खबरों और पुत्र संभाजी की सुरक्षा से चिन्तित जीजाबाई पर अपने पिता लखूजी जाधव और उनके तीन पुत्रों की निजाम दरबार में निर्मम हत्या की सूचना ने मानो मुसीबत का पहाड़ पटक दिया।

इधर पति-पक्ष और दूसरी ओर पिता-पक्ष की ओर से प्राप्त अशुभ और हृदयद्रावक सूचनाओं से दुःखी जीजा बाई को अनेक संकटों ने घेर लिया। एक और शहाजी की जागीर पुना पर बीजापुर सरदार मुसर जगदेव के हमले और पुना को मटियामेट करने की घटना तथा शहाजी के चचेरे भाई की पत्नी को आदिलशााह के सरदारों द्वारा उठा ले जाने की घटनाएं जीजाबाई को विचलित कर गईं। ऐसे ही संकट पूर्ण समय में शिवनेरी के किले में मां शिवाई (कुल देवी) के आशार्वाद से उन्होंने शिवाजी को जन्म दिया।

बाल्यावस्था में किला जीताः-

अब माता जीजाबाई का सम्पूर्ण ध्यान शिवाजी की रक्षा और उसके उन्नयन की ओर ही केन्द्रित हो गया। वे अपना सम्पूर्ण जीवन उस पर ही न्यौछावर कर शिवाजी को वीर, निर्भीक, तेजस्वी तथा सम्राट् बनाने में लग गईं। इसके लिए उन्होंने बहुत ही दूरदर्शिता से कार्य-योजना को निश्चित किया। वे धीर गंभीर होकर शिवा को आगे बढ़ाने में जुट गईं। अपनी उच्चतम महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने का दृढ़ संकल्प लेकर ७ वर्षीय शिवाजी और वृद्ध सरदार कोणदेव के सहयोग से बिखरे-बिखरे पूना (पुणे) को फिर से बसाने के कार्य का शुभारम्भ किया। इधर शिवाजी भी अपनी बाल्यावस्था से किशोवस्था की ओर बढ़ते समय

अस्त्र-शस्त्रों का संचालन, सैन्य गठन, सामरिक ज्ञान-विज्ञान को पढ़ने और समझने में लग गये। भाग्य से यह प्रशिक्षण समय १५ वर्ष तक सतत् चलता रहा। प्रामाणिक रूप से कहा जाता है कि १५ वर्ष की किशोरावस्था में शिवाजी द्वारा अपने हम उम्र कुछ साथियों के सहयोग से तोरण के किले पर अधिकार कर लिया गया।

अपने पुत्र के इस साहस भरे सुकृत्य को देखकर माता जीजाबाई की आंखों की चमक बढ़ गई और वे शिवाजी को और भी उत्साहित करने लगीं। उन्हें शिवाजी को बढ़ते देख तथा युद्धकला में छापामार लड़ाई की उनकी कलाएं देख बहुत सन्तोष हुआ। शिवाजी अपनी माता जीजाबाई से अपने पूर्वजों की वीरता की कहानियां, युद्ध, किले-विजय आदि की बातें बड़े ध्यान से सुनते थे। इससे उनके सामरिक संस्कार प्रबल और प्रौढ़ होते चले गए।

कृतघ्नों से दूरः-

एक बार जीजाबाई ने शिवाजी को उत्साहित करते हुए कहा- 'बीजापर की आदिलशााही, निजाम और मुगलों की रियासतें मजबूत हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि हमारे योद्धा इन शासकों के लिए जान लगा कर युद्ध करते हैं और विजय प्राप्त करते हैं। ये ही लोग युद्ध समाप्ति के पश्चात् इन वीर योद्धाओं की हत्या करवा देते हैं। यह कहाँ का न्याय है। इतना ही नहीं, ये हमारे परिवार की बहु-बेटियों, खेती-बाड़ी और उपज आदि को भी बर्बाद कर देते हैं। ऐसे नीच और कृतघ्न लोगों के प्रति निष्ठावान् बने रहना बुद्धिमानी की बात नहीं। इनके विरुद्ध खड़े होकर अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करना ही तुम वीरों का काम है।' माता जीजाबाई के इन उद्‌गारों को सुनकर शिवाजी की आंखें लाल हो गईं और उनका जवान खून खौलने लगा। बस

'आदिलशााही, निजाम और मुगलों के मजबूत होने का मुख्य कारण यह है कि हमारे ही योद्धा इन शासकों के लिए जान लगा कर युद्ध करते हैं।'

फिर क्या था, माँ का आशीर्वाद लेकर शिवाजी ने हिन्दू पद पादशाही की स्थापना कर संकल्प कर लिया।

धैर्यशील माताः-

इधर माता जीजा को एक दूसरा ही अन्तर्द्वन्द्व सता रहा था। अपने पति की कैद और बड़े पुत्र संभाजी की धोखे से हत्या से वे विचलित हो गई थीं। इतना सब कुछ होते हुए भी माता जीजाबाई अपने होनहार वीर पुत्र के विजय अभियानों में उनके साथ अहर्निश रहने लगीं। इतिहास के पृष्ठों के अनुसार बीजापुर के शक्तिशाली सरदार अफजल खां का प्रकरण हो अथवा पन्हाला के किले में पांच महीनों तक शिवाजी का दुश्मनों से घिरा रहना हो, अथवा शाइस्ता खां का मुगल सेना के साथ पुना पर आक्रमण हो, जीजाबाई ने शिवाजी की गैर हाजिरी में समस्त प्रशासनिक अधिकार के कार्यों की लगाम कस कर अपने मजबूत हाथों में पकड़ ली और राज्य को बड़े सुन्दर ढंग से संचालित करती रहीं। यह जीजाबाई की ही कार्य योजना थी कि अफजल खान के कटे हुए शिर को देखा जा सका। पन्हाला के किले में शिवाजी के घिर जाने पर स्वयं सेना लेकर युद्ध के लिए जीजाबाई ने पूरी तैयारी कर रखी थी। इतना ही नहीं, जीजाबाई ने बलात् धर्म परिवर्तन कराए गए अपने संबंधियों और स्वधर्मबंधुओं को पुनः अपने धर्म में शामिल कर अत्यंत साहस और दूरदर्शिता का परिचय दिया। इन्हीं लोगों ने जीजाबाई और शिवाजी का आखरी समय तक साथ दिया।

खिसियानी बिल्लीः-

शिवाजी और संभाजी के ओरंग जेब की कैद से निकल भागने से वह झुंझला उठा। इसके प्रतिशोध स्वरूप ओरंगजेब ने काशी विश्वनाथ के मंदिर को ध्वस्त कर दिया और हिन्दुओं पर जजिया कर लगाने जैसा कुकृत्य कर डाला। इस पर ओरंगजेब से प्रतिशोध लेने के लिए जीजाबाई ने ७४ वर्ष की आयु में शिवाजी को आदेश दिया। बस फिर क्या था, शिवाजी ने उसके छक्के छुड़ा दिये।

अमूल्य श्रेय-

भारतीय इतिहास में यह महत्त्वपूर्ण तथ्य स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है कि भले ही छत्रपति शिवाजी राजे अपने जीवन में ओरंगजेब का समूल नाश न कर पाये हों, लेकिन मुगलों के पतन की शुरूआत तो शिवाजी के ही हाथों हुई और हिन्दू पद पादशाही की स्थापना हुई। इसका सम्पूर्ण श्रेय उनका निर्माण करने वाली माता जीजाबाई को ही जाता है।

माता का महाप्रयाणः-

यह ध्यान देने योग्य बात है कि मराठों की शक्ति से मुकाबला करने हेतु ओंरगजेब को राजधानी छोड़ दक्षिण में आना पड़ा और वहीं उसकी जीवन लीला समाप्त हुई। सन् १६७४ में शिवाजी ने स्वराज्य और स्वयं को महाराजा के रूप में मान्यता प्राप्त करने के उद्‌देश्य से अपना राज्याभिषेक कराया। स्वराज्य और शिवाजी के सिर पर सुवर्णछत्र देखकर जैसे जीजाबाई का उद्‌देश्य पूर्ण हो गया। राज्याभिषेक सम्पन्न होने के १३ दिन बाद जीजाबाई ने अपने नश्वर-शरीर का परित्याग कर स्वर्ग प्राप्त किया।

माता जीजाबाई का जीवन एक आदर्श माता के रूप में जाना जाता रहेगा। उनका नाम सदा अमर रहेगा। समस्त कृतज्ञ राष्ट्र का वीर शिवाजी की माता जीजाबाई को प्रणाम।❐❐

सिद्धान्त चर्चा

कर्म फल व्यवस्था में भ्रान्तियों पर विचार

❑पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक मो० 9411512019, 9557641800
गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून उत्तराखण्ड

आज विपरीत मान्यताओं के कारण ही मानव कर्म तथा कर्म फल के मूल सिद्धान्तों को समझ नहीं पाता और उचित तथा अनुचित क्या है, इसका निर्णय नहीं कर पाता। साथ ही मनुष्य की सत्य पुरुषार्थ शक्ति, पुरुषार्थ से कमाया हुआ धन और अमूल्य जीवन के मूल्यवान क्षण व्यर्थ होते हैं।

१८ वीं शताब्दि में प्राचीन वैदिक ऋषियों की श्रेणी में हम मात्र महर्षि दयानन्द सरस्वती को पाते हैं, क्योंकि महर्षि दयानन्द जी ने संसार को ईश्वरीय ऋत, सत्य ज्ञान व विज्ञान से जोड़ने का मार्ग दिखाया। उन्होंने वेदों के रूढ़ि अर्थों का निरास करके इतिहासपरक अर्थों से छुड़ा कर ईश्वरपरक अर्थ बताए और वेदों के ईश्वरपरक अर्थों से समाज में व्याप्त तमाम धार्मिक अन्धविश्वास, सामाजिक, राजनैतिक, साम्प्रदायिक मिथ्या मान्यताओं का उन्मूलन किया। यह भी सत्य है कि सदियों से तमाम अन्धविश्वासों की गहरी जड़ें मानव के संस्कारों में जम चुकी हैं। इनको निकालना इतना आसान नहीं है किन्तु मुश्किल भी नहीं है। आज के युग में बड़े से बड़े राष्ट्र नेतृत्त्व तथा धर्मगुरु या समाज सुधारक सत्य आध्यात्म ज्ञान के अभाव में भटक रहे हैं और जब उच्च नेतृत्त्व ही अविज्ञान पथ पर चले तो जन साधारण की बात ही क्या कहें। आइए कुछ भ्रान्त मान्यताओं पर संक्षिप्त विचार करते हैं।

प्रश्न :- क्या हमें जो सुख-दु:ख प्राप्त होते हैं वे पूर्व जन्म के कर्मों के फल हैं या इस जन्म के?

उत्तर :- मनुष्य को जन्म से मिश्रित फल प्राप्त होते हैं किन्तु वर्तमान कर्मों के फल हमें सुख दु:ख रूप में इसी जन्म में मिलते हैं। तीनों प्रकार के सभी आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक सुखों और दु:खों को पूर्वजन्मों के कर्मों के साथ नहीं जोड़ा जा सकता है, किन्तु पूर्वजन्म के कर्मों के आधार पर कुछ गरीब के यहाँ जन्म लेते हैं, कुछ धनाढ्य परिवारों में जन्म लेते हैं। यह सुविधा और असुविधा मिलना पूर्व जन्मों के फल हैं। जीव के जन्म से पहले माता, पिता के पास उपलब्ध मार्गों व ज्ञान आदि के स्तर को ही उस जन्म लेने वाले जीव के पूर्व कर्मों से सम्बद्ध किया जा सकता है।

प्रश्न : - क्या यह मान्यता ठीक है कि भाग्य को बदला जा सकता है या हर कोई किस्मत का खाता है?

उत्तर: - इस प्रश्न पर अभी यह कहना है कि हम भाग्यवादी नहीं, कर्मवादी बने। जीवन में कर्म प्रधान है और अच्छे व बुरे कर्म फल को हम भाग्य का फल अज्ञानता से कहते हैं। जब भाग्य पूर्व निश्चित ही नहीं, अर्थात् इस जन्म में मिलने वाले सभी सुख व दु:ख जब पूर्व जन्मों के आधार पर निश्चित नहीं तो पुरुषार्थ करके सदाचार द्वारा अपने सुखों को बढ़ाया तथा दुराचार द्वारा अपने दु:खों को बढ़ाया जा सकता हे। वेदों की शिक्षा में पुरुषार्थ पर ही बल दिया गया है। कहा भी है मेरे दायें हाथ में पुरुषार्थ है और बांये हाथ में भाग्य है। केवल भाग्य के सहारे बैठने वाले व्यक्ति कभी सफल नहीं होते हैं।

प्रश्न :- समाज में भ्रूण हत्या क्या जन्म लेने वाले जीव के कर्मों का फल है?

उत्तर:- जन्म लेने वाले जीव का कर्म फल नहीं है। क्योंकि भ्रूण-हत्या माता-पिता की सहमति से उनकी स्वतन्त्रता के कारण हुई है, इसमें ईश्वर का कोई हस्तक्षेप नहीं है। इस प्रकार के दु:ख को आधिभौतिक दु:ख कहा जा सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भ्रूण-हत्या को ब्रह्म-हत्या की संज्ञा दी है। अत: भ्रूण हत्या कराने वाला, करने वाला तथा सहमति देने वाला सभी इस अपराध के दोषी हैं।

प्रश्न :- महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा मृत्यु पूर्व कहे शब्दों, -हे ईश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो! -का क्या अर्थ है?

उत्तर- महर्षि दयानन्द सरस्वती जी वेदों के पूर्ण विद्वान थे।

वेद धर्म न मानने के कारण ही जनसाधारण मूल सत्य सिद्धान्तों को नहीं समझ पाते हैं। इसके लिए सत्य कर्म-मीमांसा को समझना अनिवार्य है। मनुष्य का स्वाभाविक लक्ष्य है-सत्य धर्म, सत्य ईश्वर को मानना और ऋत-सत्य की ओर समाज को राह दिखाना। यह सबसे उत्तम पुण्य है और असत्य, ईश्वर के गुण कर्म के विपरीत, सृष्टिक्रम के विरुद्ध जनता को भ्रमित करना सबसे बडा पाप है।

वे जानते थे कि यह मुझे मारने का विरोधियों का षड्यन्त्र है और षड्यन्त्र करना उनका स्वतन्त्र कर्म करने का कारण है, अतः षड्यन्त्रकारियों ने अपने कर्म की स्वतन्त्रता के कारण स्वामी जी को उनके रसोइये के माध्यम से कालकूट विष दूध में पिलवा दिया था। महर्षि दयानन्द जी उसी विष से महाप्रयाण कर गये थे। महान ईश्वरभक्त की अपने अन्तिम समय में परमात्मा के प्रति सच्ची श्रद्धा थी जो इस प्रकार से व्यक्त हुई। स्वामीजी के अन्तिम शब्द भी विचारणीय हैं कि 'तेरी इच्छा पूर्ण हो, आहा!' बहुत प्रसन्नता पूर्वक ये शब्द कहे गये हैं कि हे भगवन्! तेरे द्वारा जीवों के कल्याण की इच्छा है, वह पूर्ण हो। स्वामीजी ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव कल्याण के लिए लगा दिया था और इसी कल्याण की ईश्वरीय इच्छा के पूर्ण होने की प्रार्थना अन्तिम समय में कर गये थे।

प्रश्न :– किसी दुर्घटना में कुछ व्यक्ति मर जाते हैं, कुछ बच जाते हैं, क्या बचने वालों की आयु शेष थी इसीलिए बच गये?

उत्तर :– इसका कारण यह नहीं है कि दुर्घटना में मरने वालों की आयु समाप्त हुई थी या बचने वालों की आयु शेष थी, क्योंकि किसी की भी आयु पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार पर पूर्व निश्चित नहीं है। दुर्घटना में अलग-अलग व्यक्तियों की शारीरिक चोट लगने के कारण उनकी मृत्यु शारीरिक क्षमता पर निर्भर करती है। हर व्यक्ति पर लगने वाली चोट अलग-अलग होती है। इसमें किसी की किस्मत का निश्चित कोई हाथ नहीं होता है इसलिए दुर्घटना किसी भी समय कहीं पर भी हो सकती है, व व्यक्तियों की मृत्यु या चोट लगना दुर्घटना के प्रकार पर निर्भर करती है। अतः यह नहीं कहा जा सकता कि जिनकी मृत्यु हुई उनकी आयु समाप्त हो गयी थी और जो बच गये उनकी आयु शेष थी। ऐसा मानना मानसिक अन्धविश्वास है।

प्रश्न :– क्या ज्योतिष ग्रन्थों में जो फलित भविष्यवाणियाँ की जाती हैं, वे झूठी होती हैं?

उत्तर :– फलित ज्योतिष की भविष्यवाणियाँ व ग्रन्थ सभी कल्पना पर आधारित हैं। वे झूठे हैं तथा गणित ज्योतिष ग्रन्थ व उसकी भविष्यवाणियाँ ठीक हैं। गणित ज्योतिष भूगोल में सूर्य, चन्द्र आदि की गति से सम्बन्धित ज्ञान विज्ञान है। वह ही मात्र मानने योग्य है। फलित ज्योतिष भ्रामक है।

प्रश्न :– जो लोग वैदिक धर्म को नहीं मानते हैं और विभिन्न मतों में जाकर पूजा पाठ करते हैं और सुख शान्ति का अनुभव करते हैं, क्या वह सुख शान्ति गलत है?

उत्तर :– ईश्वरीय पूजा का सम्बन्ध आत्मा से है और आत्मा सत्य ज्ञान-कर्म से ही सन्तुष्ट होती है। जो ईश्वरीय वाणी वैदिक धर्म को छोड़कर अन्य मतों में रहकर अन्ध पूजा करते हैं, वह उनके मन को तो सन्तुष्टि दे सकता है किन्तु सत्य विवेक और आत्मज्ञान नहीं दे सकते हैं। उनको अपने लक्ष्य में जो सफलता मिलती है वह उनका पुरुषार्थ रहता है। सत्य ईश्वर की सत्य पूजा से सत्य मार्ग मिलता है और कल्पित देवों की पूजा अर्चना से मनुष्य पाप, अत्याचार व अनैतिकता से नहीं बच सकता है।

प्रश्न :– विभिन्न मतों के धर्माचार्य जो वेदों के प्रतिकूल असत्य धर्म का प्रचार कर रहे हैं, क्या यह गलत है?

उत्तर :– महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें सम्मुलास में लिखते हैं कि जो -विद्यादि सद्गुणों में गुरुत्त्व नहीं है, ऐसा कहते और झूठ-झूठ कंठी, तिलक, वेद विरुद्ध मंत्रोपदेश करते हैं, वे गुरु ही नहीं, गडरिये जैसे हैं। जैसे गडरिये अपनी भेड़ बकरियों से दूध आदि का प्रयोजन सिद्ध करते हैं वैसे ही शिष्यों के चेले चेलियों का धन हर के अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं।

विशेष ध्यानाकर्षण

आज संसार में अधिकांश मानव जगत् कल्पित अन्ध विश्वास, भ्रम व मतभेद में फंसे हुए हैं। इतना तो महाभारत काल से पूर्व में भी नहीं थे। वेद धर्म न मानने के कारण ही जन साधारण मूल सत्य सिद्धान्तों को नहीं समझ पाते हैं। इसके लिए सत्य कर्म-मीमांसा को समझना अनिवार्य है। मनुष्य का स्वाभाविक लक्ष्य है- सत्य धर्म, सत्य ईश्वर को मानना, और ऋत-सत्य की ओर समाज को राह दिखाना। यह सबसे उत्तम पुण्य है और असत्य, ईश्वर के गुण कर्म के विपरीत और सृष्टि क्रम के विरुद्ध जनता को भ्रमित करना सबसे बडा पाप है। इस लेख में हमने वर्तमान अन्ध कर्म-मीमांसा का संकेत मात्र किया है। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता समाज को सत्य मार्ग दिखाने की है।

श्रद्धेय पाठक जी! आज विपरीत मान्यताओं के कारण ही मानव कर्म तथा कर्म फल के मूल सिद्धान्तों को समझ नहीं पाता और उचित तथा अनुचित क्या है, इसका निर्णय नहीं कर पाता। साथ ही मनुष्य की सत्य पुरुषार्थ शक्ति, पुरुषार्थ से कमाया हुआ धन और अमूल्य जीवन के मूल्यवान क्षण व्यर्थ होते हैं। इसके अतिरिक्त ईश्वरीय सिद्धान्त, सृष्टिक्रम व धर्म के विपरीत मान्यताओं के कारण, यह जीवन और अगला जन्म दुःख दायी होता है। अतः मनुष्य जीवन की सुफलता के लिए सत्य सिद्धान्त को जानना और तदनुसार आचरण करना परम आवश्यक है।

(नोट : इस लेख में सत्यार्थप्रकाश और श्रद्धेय सतीश आर्य जी द्वारा लिखित ग्रन्थ कर्म एवं कर्मफल मीमांसा से कुछ विचार लिये गये हैं।)

जीवन को उत्तम बनाने के चार उपाय-२

बृहदारण्यक उपनिषद् पंचम अध्याय, १३वें ब्राह्मण के आधार पर

❐दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

प्रथम उपाय=उक्थ के विषय में पाठक गतांक में पढ़ चुके हैं, अब दूसरे उपाय 'यजुः' के विषय में पढ़िये-

यज्ञ का अभिप्राय केवल अग्निहोत्र अथवा हवनकुंड के चारों ओर बैठकर समंत्र आहुति डालने से नहीं, किंतु उन सब कार्यों से है जिन में निज हित को गौण रखकर परहित को प्रमुखता दी जाती है। स्वयं कष्ट झेल कर दूसरों को सुख पहुंचाया जाता है और सब लोगों को एक सूत्र में आबद्ध कर सर्व हित के काम किए जाते हैं।

दूसरा साधन यजुः

प्रजापति ऋषि ने जीवन दर्शन का दूसरा पग 'यजुः' बताया। उपनिषत्कार के शब्दों में -

यजुः प्राणो वै यजुः प्राणं हीमानि सर्वाणि भूतानि युज्यन्ते, युज्यन्ते हास्मै सर्वाणि भूतानि श्रैष्ठ्याय यजुषः सायुज्यं सलोकतां जयति य एवं वेद।।

यह जीवन यजुः है क्योंकि इस प्राण-रूप जीवन शक्ति के द्वारा सब जीव-जंतु 'युक्त'=जुड़े हुए हैं। जो प्राण शक्तियुक्त जीवन के इस रहस्य को जानता है वह श्रेष्ठता को प्राप्त होता है और इसकी समानता और समीपता को अनुभव करता हुआ विजय को प्राप्त करता है।

यजु शब्द युज्=योगे धातु से बनता है। 'युनक्ति इति यजुः' जो जोड़ता है वह यजु है। उपनिषत्कार ने भी यहाँ पर 'इमानि सर्वाणि भूतानि युज्यन्ते युज्यन्ते हास्मै सर्वाणि भूतानि' -अर्थात् ये सब प्राणी इकट्ठे होते हैं और इसके लिए सब प्राणी युक्त होते हैं -ऐसा कहकर व्यक्ति और समाज के संगठन का उपदेश दिया है। व्यक्ति और समाज के संगठन का आधार कर्तव्य और अधिकार का उचित समन्वय है। व्यक्ति अपने कर्तव्य की चिंता करे और समाज उसके अधिकार की चिंता करे, यही आधार है जिस पर संगठन का भवन दृढ़ता के साथ खड़ा किया जा सकता है।

समाज और व्यक्ति

समाज में अव्यवस्था तभी फैलती है जब व्यक्ति अपने कर्तव्य को भूल जाए। दूसरे शब्दों में यूं भी कह सकते हैं कि व्यक्ति कर्त्तव्य को गौण स्थान दे और अधिकार को प्रथम स्थान दे, तथैव समाज अधिकार को गौण स्थान दे तथा कर्त्तव्य को प्रथम स्थान देने लगे। भारत के मध्य युग में ऐसा ही हुआ। जनता अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को प्रमुखता देने लगी और समाज के प्रति अपने कर्तव्य की सर्वथा उपेक्षा करने लगी। समाज ने जनता के निर्मल अंगों, जैसे शूद्र और नारी तथा अनपढ़ों की उपेक्षा की। इसका फल यह हुआ कि भारत सदियों तक पराधीन रहा। समाज छिन्न-भिन्न होकर कई टुकड़ों में बंट गया। छूत-अछूत, जात-पात भेद और नारी निर्यातन, उत्पीड़न, धर्षण और सती प्रथा तथा बलात् वैधव्य= विशेषतः अक्षतयोनि बाल विधवाएँ- इत्यादि सामाजिक समस्याएँ पैदा हो गईं।

विद्याधर : भगवन्! मुझे एक शंका है। आज्ञा दें तो कहूँ!

प्रजापति : सौम्य! अवश्य कहो। यदि मैं जानता होऊँगा तो अवश्य उसका समाधान करूँगा।

विद्याधर : जीवन-दर्शन के क्षेत्र में समाज का प्रश्न कैसे आ सकता है? इसमें तो केवल व्यक्तिगत अभ्युदय का ही समावेश होना चाहिए।

प्रजापति : ब्रह्मचारिन्! तुम्हारी यह धारणा भ्रांत है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज के बिना उसका जीवन एक क्षण भी नहीं चल सकता। जब वह पैदा होता है तब उसे अपने पालन पोषण के लिए अपने माता-पिता और संबंधियों पर, शिक्षा के लिए गुरुजनों पर, अन्न-वस्त्र-आवास आदि के लिए कृषक, जुलाहा और राज मजदूर आदि समाज के विभिन्न अंगों पर निर्भर रहना पड़ता है। खेत में अन्न का बीज बोने से लेकर अन्य पकाने तक सारे विविध कार्य वह अकेला कभी नहीं कर सकता। उसे सदा दूसरों से सहायता लेनी पड़ती है।

बिना किसी के सिखाए वह कुछ सीख नहीं सकता है। अगर वह समाज से अपने को सर्वथा विच्छिन्न कर ले तब उसका जीवन एक पशु समान ही होगा। समाज में प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे के साथ विभिन्न रूपों में इतना अधिक संश्लिष्ट और सम्बद्ध है कि एक दूसरे के बीच भेद रेखा खींचना संभव नहीं है। कपड़े के ताने-बाने के समान हर व्यक्ति एक दूसरे के साथ आबद्ध है।

इसलिए जब हम जीवन-दर्शन पर विचार करते

हैं तब समाज और सामाजिक कर्त्तव्य की उपेक्षा कदापि नहीं कर सकते। समाज का प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है और व्यक्ति का प्रभाव समाज पर। वेदों में जो प्रार्थनाएं की गई हैं उनमें बहुवचन का प्रयोग प्रायः सर्वत्र आता है जैसे–

यद् भद्रं तन्न आसुव

जो कल्याण का मार्ग है वह हम सबको प्राप्त हो। **स्वस्ति पंथामनुचरेम।।**

हम सब कल्याण के मार्ग पर चलने वाले हों।

भूयिष्ठान्ते नमः उक्तिं विधेम।।

हम तुझे बहुत बहुत नमस्कार करते हैं।

वेद में भगवान कहते हैं– तू मुझको=अर्थात् समाज को दे और मैं=अर्थात् समाज तुझे देता हूँ। हम जैसा और जितना समाज के हित के लिए करेंगे, समाज भी हमें उतना और वैसा ही बदले में लाभ देगा। समाज कोई अलग वस्तु नहीं है। एक उद्देश्य, एक विचार और एक सदृश मार्ग पर चलने वाले जन समूह का नाम ही समाज है। इसलिए व्यक्ति और समाज दोनों में सामंजस्य बनाने के लिए आवश्यक है कि सामाजिक नियमों के पालन में सब परतंत्र रहें और अपने व्यक्तिगत और हितकारी नियमों में सब स्वतंत्र रहें।

सामाजिक जीवन ही यज्ञ है

समाज के इस सर्वोत्तम रूप का नाम ही 'यज्ञ' है। समाज संगठन के जितने भी नियम और सिद्धांत हैं, उन सबका इसमें बहुत सुंदर ढंग से समन्वय है। यज्ञ का अभिप्राय केवल अग्निहोत्र अथवा हवनकुंड के चारों ओर बैठकर समंत्र आहुति डालने से नहीं, किंतु उन सब कार्यों से है जिन में निज हित को गौण रखकर परहित को प्रमुखता दी जाती है। स्वयं कष्ट झेल कर दूसरों को सुख पहुंचाया जाता है और सब लोगों को एक सूत्र में आबद्ध कर सार्वजनिक हित के काम किए जाते हैं। यज्ञ शब्द की धातु यज्=देवपूजा संगतिकरण दानेषु= अर्थात् यज्ञ वह है जिसमें प्रभु भक्ति के साथ–साथ किसी भी विद्या के निष्णात व्यक्तियों का सम्मान हो, सबमें एक सूत्रता और संगठन लाने की भावना हो और दूसरों के हित के लिए अपने स्वार्थ का त्याग– 'दान'– करने की आकांक्षा हो।

गीता के शब्दों में इस प्रकार के 'यज्ञ–कर्म' को लोक संग्रह कहा गया है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कर्म के लिए प्रेरणा देते हुए 'लोकसंग्रह' के लिए कर्म करने पर विशेष बल दिया है। व्यक्ति और समाज का पारस्परिक संबंध कैसा हो– इसका सर्वोत्तम मूर्त रूप भारत की वर्ण आश्रम व्यवस्था थी। यह ठीक है कि काल के प्रवाह के साथ इसमें कई दोष आ गए, पर इसके स्वरूप की परिकल्पना जिस ढंग से की गई है और इसकी जो पृष्ठभूमि है वह सर्वथा वैज्ञानिक और मानवीय वृत्तियों के अनुकूल है। आज के युग में कुछ राष्ट्र अधिक व्यक्तिवादी और कुछ अधिक समाजवादी हैं। इसी से संघर्ष पैदा होते हैं।

उपनिषद् के इस वचन के अनुसार जो इस 'यजुः'– संगठन, समन्वय, सामंजस्य, तारतम्य, संतुलन और इन सब के लिए एक शब्द 'यज्ञधर्म' का पालन करता है वह 'श्रेष्ठता', 'सायुज्य' और 'सलोकता'= समानता और समीपता– को प्राप्त होता है।

चार वेदों में एक वेद 'यजुर्वेद' भी है। यह कर्मकांड का वेद है। इसका अभिप्राय यह भी है कि मनुष्य का जीवन कर्मशील, कर्मपूर्ण हो। कर्मरहित व्यक्ति कभी उन्नति नहीं कर सकता है। निष्काम भाव से कर्म करने से ही मनुष्य सच्चा कर्मयोगी बन सकता है और यही सामाजिक संगठन का मूल मंत्र है। (आगामी अंक में तीसरा साधन)

ओ३म्

शांतिधर्मी के सदस्य बनने और शुल्क जमा कराने के लिए मिलें।

प्रकाश मेडिकल हाल

पटियाला चौक, जींद-126102

Regd. No. 108463

हर प्रकार की अंग्रेजी, देसी व आयुर्वेदिक दवाईयाँ
उचित मूल्य पर खरीदने के लिए पधारिए।

Dr. S.P.Saini
(B.Sc. D. Pharma, आयुर्वेद रत्न)

M- 93549 55283
92552 68315

आत्मिक उन्नति

अग्निहोत्र के आठ सूत्र

❑**हरिकृष्ण आर्य,** चौखण्डी गांव, नई दिल्ली

परम पिता परमात्मा का यह पवित्र अनुष्ठान अग्निहोत्र प्राकृतिक, सामाजिक व वैचारिक प्रदूषण को समाप्त कर इस मृत्यु लोक के जीवन को जीने योग्य स्वर्गमय व सुगन्धित बना देता है। हवन में आहूत की जाने वाली सामग्री से वायु, जल, अन्न, वनस्पति आदि की शुद्धता, निर्मलता व पवित्रता बनी रहती है। हवन से यथेष्ट वर्षा की प्राप्ति होती है, वर्षा से अन्न की वृद्धि, प्राणियों की समृद्धि व आरोग्य बढ़ता है।

(१) प्रयोजन– अग्निहोत्र अर्थात् अग्निरूप परमेश्वर के लिये हवि, देवयज्ञ अर्थात् जड़ देवों की पूजा (सम्मान व सत्कार), यज्ञ अर्थात् परमेश्वर की आज्ञानुसार उत्तम कर्मकाण्ड, हवन अर्थात् आहुतियों द्वारा द्रव्यों का अर्पण, होम अर्थात् त्याग भावना से सर्वस्व समर्पण– आदि एक ही आध्यात्मिक अनुष्ठान के विभिन्न नाम हैं। यह अनुष्ठान परमपिता परमेश्वर की उपासना व उसके बनाये अग्नि, सूर्य, पृथ्वी, जल, वायु, आकाश आदि जड़ देवों की पूजा, उसी की कृपा से प्राप्त द्रव्य, सामग्री, अन्न, धन आदि के अर्पण से निष्काम परोपकार की भावना से सम्पन्न किया जाता है।

वैदिक शास्त्रों में सद्गृहस्थियों का सन्ध्या वन्दन के साथ साथ अग्निहोत्र का यह नित्य कर्मकाण्ड श्रेष्ठतम कर्म बताया गया है। इसमें वेद मंत्रों के उच्चारण से ईश्वरोपासना, ज्ञानवर्धन व याज्ञिक को ऐहिक व पारमार्थिक दोनों सुखों की प्राप्ति होती है। यज्ञ करने से श्रेष्ठ धार्मिक मान्यताओं का परिपालन होता है। हव्य द्रव्य शुद्ध घी व सुगन्धित सामग्री की आहुतियों से वायु, जल, अन्न, वनस्पति आदि की शुद्धि व पवित्रीकरण होता है, जो महान् परोपकार व मानव कल्याण का हेतु है। यज्ञोपरान्त संकल्प व प्रतिज्ञा के द्वारा अवगुणों का त्याग करते–करते याज्ञिक के जीवन में सभी शुभ, कल्याण कारक गुण, कर्म, स्वभाव, सुख व आनन्द का भलीभांति पदार्पण हो जाता है, जिससे उसका जीवन पवित्र व सुगन्धित बन जाता है।

(२) पवित्रता–परमपिता परमेश्वर परम पवित्र है। ऐसे परमपिता का अनुष्ठान करते समय याज्ञिक का भी पवित्र होना अति आवश्यक है, तभी परमेश्वर प्रसन्न होंगे। सर्वप्रथम शारीरिक शुद्धता, वस्त्रों व पदार्थों की स्वच्छता और स्थान व समय की उपयुक्तता अनिवार्य है। याज्ञिक को भौतिक यज्ञ से पूर्व आत्मिक यज्ञ की अग्नि को भी प्रज्ज्वलित करना होता है अर्थात् मन व अन्तःकरण की पवित्रता भी अत्यन्त अनिवार्य है। काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहम्, ईर्ष्या, द्वेष, सभी सांसारिक विचारों व धन्धों से निश्चिंत होकर, प्रसन्नचित्त उपासना वृत्ति को अपनाते हुए यज्ञ के लिए बैठना चाहिए। वातावरण, वृत्ति व भाव को ईश्वरमय बनाने के लिए ही इस महायज्ञ के आरम्भ में ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रों का उच्चारण, अर्थसहित मनन व चिन्तन का विधान है।

आचमन की क्रिया व अंग स्पर्श पवित्रता के लिए ही हैं। इनका भाव है कि सर्वरक्षक परमेश्वर मेरे सारे शरीर, अंग–प्रत्यंगों को स्वस्थ, सामर्थ्ययुक्त, निरोग व पवित्र बनाये रखें। मेरा मन व अन्तःकरण पवित्रता से ओत–प्रोत हो जिससे कि मैं आपका यह पवित्र अनुष्ठान भली भांति सम्पन्न कर सकूँ।

(३) प्रकाश–सांसारिक जीव सदा अन्धकार में ही न भटकता रहे इसलिए इस परम दयालु व परोपकारी परमात्मदेव ने सूर्य व अग्नि आदि का वरदान जीव के कल्याणार्थ किया। सूर्य व अग्नि के कारण ही संसार में सर्वत्र चेतना, जाग्रति व कर्म का उदय हुआ जो मानव मात्र की उन्नति का आधार बना। मनुष्य, वायु, जल, पृथ्वी आदि का उपयोग करते–करते उनकी शुद्धता, स्वच्छता व सुन्दरता को हानि पहुँचाता रहता है। हवन उस महान् परोपकारी परमात्म देव के ऋण से उऋण होने का एक वैज्ञानिक माध्यम है।

याज्ञिक सूर्य देव की उपस्थिति में छुपे हुए अग्नि देव को वर्तमान करने के लिए दीपक जलाता है, अग्न्याधान व अग्नि प्रज्वलन क्रिया द्वारा प्रकाशित अग्नि को यज्ञकुण्ड में स्थापित कर देता है। याज्ञिक की यह अग्नि गृहस्थ के लिए अत्यन्त कल्याणकारक हो, इसके लिये साथ–साथ परमात्म देव से प्रार्थना करता है– हे स्वप्रकाश अग्नि रूप परमात्मन्। यह यज्ञाग्नि भली भांति उद्दीप्त हो जिससे कि

में हवन का यह पवित्र अनुष्ठान निर्विघ्न सम्पन्न कर सकूँ। इस यज्ञवेदी की तपस्थली पर उपस्थित सभी महानुभावों के मन व अन्तःकरण प्रकाश व प्रसन्नता से भरे हों। अग्निदेव की ऊर्ध्वा गति की भाँति ही सबके जीवन उन्नत हों, अविद्या का अंधकार दूर हो और ज्ञान का प्रकाश हो। इस सुन्दर प्रार्थना के साथ ही याज्ञिक हवन के पवित्र कर्मकाण्ड को आगे बढ़ाता है।

(४) **पूर्ण समर्पण**–समिदाधान क्रिया में याज्ञिक तीन समिधाएँ घृत में भिगोकर यज्ञाग्नि को अर्पित करता है। पूर्ण श्रद्धा व प्रेम के साथ यज्ञाग्नि को बढ़ाता है जिससे कि यह यज्ञिय अग्नि पृथ्वीलोक, अन्तरिक्ष व द्युलोक में विस्तीर्ण होकर सबके लिए लाभकारी व उपयोगी सिद्ध हो। पूर्ण समर्पण हम समिधा से सीखें जो अपने अस्तित्व को पूर्णतया जलाकर, यज्ञग्नि की निरन्तरता व प्रकाश को बनाये रखती है। जिस प्रकार सूर्य सृष्टि के आदि से निरन्तर प्रकाश दे रहा है, उसी प्रकार समिधा का यह पूर्ण बलिदान अग्नि को निरन्तर प्रज्वलित रखता है। याज्ञिक का जीवन भी समिधा के समान हो, ऐसा भाव उसके जीवन में बना रहना चाहिए। अपने जीवन को पूर्णतया यज्ञमय व ईश्वरमय बना लेना ही परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना है। परमेश्वर का आदेश है कि स्वर्ग की कामना करने वाले गृहस्थ नित्य यज्ञ करें। याज्ञिक को विपुल धन ऐश्वर्य, सामर्थ्य शक्ति, मान सम्मान, ज्ञान, ध्यान, सुख आनन्द सभी कुछ परमेश्वर की कृपा व प्रसन्नता से शीघ्र प्राप्त हो जाते हैं। इस प्रकार यज्ञ ऐहिक और पारमार्थिक दोनों सुखों का देने वाला है।

(५) **परोपकार**–याज्ञिक का जीवन त्याग भावना व परोपकार की भावना से भर जाता है। यज्ञ के करने से उसे यह ज्ञान प्राप्त हो जाता है कि जीवन में मुझे जो कुछ भी मिला है, परमेश्वर की कृपा से ही मिला है और यह सब कुछ उसी का है, अतः मुझे त्याग भावना से ही इसका उपयोग करना चाहिए। याज्ञिक यज्ञ के समय अपने सोमप्रिय गुणकारी विशिष्ट पदार्थ व श्रेष्ठ द्रव्य घृत, सामग्री, अन्न, सुगन्धित जड़ी बूटियाँ, मेवे आदि अग्निदेव को अर्पित करता है और अग्निदेव उसको कई सहस्रगुणा विस्तृत करके सबको बाँट देता है। इस दान के द्वारा याज्ञिक मोह, लोभ, अहंकार आदि दोषों से रहित होकर एक उदात्त दानी व परोपकारी बन जाता है। याज्ञिक द्वारा वेदमंत्रों के अन्त में 'स्वाहा' व 'इदन्न मम' का उच्चारण कर आहुतियाँ देना इसी भाव की पुष्टि करता है। यही महान् यज्ञीय भावना है। परमपिता परमेश्वर तो सर्वतो महान् परोपकारी व परम याज्ञिक है। यज्ञ कर्म करने वाला ईश्वरभक्त भी परमेश्वर द्वारा निर्देशित परोपकार के इस मार्ग पर चल पड़ता है। परोपकार से बड़ा कोई और धर्म इस संसार में नहीं है। यह ईश्वरीय गुण याज्ञिक के जीवन से परिलक्षित होता है। याज्ञिक उस रस से तृप्त हो जाता है जिसके मिलने से उसके जीवन में कोई न्यूनता कहीं कभी नहीं रहती।

(६) **प्रार्थनाएँ**–प्रातःकाल के यज्ञ में आहुतियाँ मुख्यतः सूर्य देव के लिए अर्पण की जाती हैं। याज्ञिक प्रभु से प्रार्थना करता है कि हे प्रभो! आप सूर्य आदि प्रकाशक लोकों के भी प्रकाशक हैं, आप ही ज्योतिस्वरूप, तेजस्वरूप व ओज स्वरूप हैं। आज के सूर्य की ऊषा किरणें व निर्मल प्रकाश हमारी मानसिक वृत्तियों को ज्योतिर्मय कर दें। हमारे मन व अन्तःकरण को शक्ति, प्रसन्नता व ज्ञान से भर दें। प्रातःकाल की इस सुन्दर वेला में आपकी कृपा व आशीर्वाद से हम यह आहुतियाँ कल्याणकारक सूर्यदेव के लिए अर्पित कर रहे हैं। यह सब द्रव्य आप का ही है, मेरा इसमें कुछ भी नहीं है। इसी प्रकार सायंकाल के यज्ञ में मुख्यतः अग्निदेव के लिये आहुतियाँ प्रदान की जाती हैं। प्रार्थना का भाव है कि हे प्रभो! आप अग्निरूप, सर्वत्र व्यापक व ज्ञान स्वरूप हैं। आप ही सब दोष निवारक, अज्ञान-अंधकार निर्मूलक व प्रकाश स्वरूप हैं। चन्द्रमा व तारागण से सुशोभित रात्रि में आप हमारे प्राणों की रक्षा करें। हमारे मन व अन्तःकरण को शिव संकल्पों से भर दें। सायंकाल की इस पवित्र वेला में हम यह आहुतियाँ विश्व कल्याण की भावना से अग्निदेव के लिए समर्पित करते हैं। यह सब द्रव्य आप का ही है, मेरा इसमें कुछ भी नहीं है। दोनों काल की इन आहुतियों के बाद दोनों समय में संयुक्त आहुतियाँ भी दी जाती हैं। ये समान आहुतियाँ मुख्यतः प्राण पुष्टि, सुख व आनन्द, मेधा बुद्धि, ज्ञान-विज्ञान व निष्काम कर्म आदि की प्राप्ति हेतु अर्पण की जाती हैं। इन वेदमंत्रों द्वारा याज्ञिक यजमान प्रभु से प्रार्थना करता है कि हे प्राणाधार, प्राणरक्षक व प्राणप्रिय परमात्मन्। आप हमारे प्राण, अपान, व्यान आदि को शुद्ध, पवित्र, संतुलित व पुष्ट बनाये रखें आप हमें अपने रस व अमृत से तृप्त करें। हमें मेधा बुद्धि, ज्ञान विज्ञान व मोक्षानन्द प्राप्त करायें। आपकी कृपा से यह सब संभव है। इन्हीं भावों व प्रार्थना के साथ हम ये आहुतियाँ यज्ञाग्नि में आपके लिए प्रदान करते हैं। आप हमें शीघ्र प्राप्त हों। यह सब हव्य-द्रव्य आपका ही है और आप को ही समर्पित है, मेरा इसमें कुछ भी नहीं है। यदि याज्ञिक और अधिक आहुतियाँ देना चाहें, तो गुरुमंत्र 'गायत्री' व 'महामृत्युंजय' मंत्र से यथेष्ट आहुतियाँ दे सकते हैं।

(७) **प्रायश्चित**– यज्ञ हवन के समापन पूर्णाहुति से पूर्व याज्ञिक एक और प्रार्थना प्रभु से करता है कि हे सभी

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

नींद क्यों नहीं आती!

विचारों की शुद्धि, संयमित जीवन, परिश्रम, मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाता है और ऐसी दशा में मानसिक प्रफुल्लता अपने आप ही बनी रहती है। फिर न तो अनिद्रा का डर रहता है, न मानसिक विकारों का और न बेईमानी या पाप का। अतः ठीक से नींद लेने के लिए अपने आपको प्रसन्न व निश्चिंत रखने का अभ्यास डालना ही चाहिए।

विलासिता के इस मशीनी युग में अन्य महारोगों की तरह ही अनिद्रा का भी एक महारोग फैल गया है।

धनदौलत और बुद्धिवैभव से दुनिया की आंखों में चकाचौंध पैदा करने वाले धनियों, उद्योगपतियों, वकील-बैरिस्टरों तथा बड़े-बड़े बुद्धिजीवियों की तरफ से आजकल अक्सर यह प्रश्न उठता है कि हमें नींद क्यों नहीं आती?

काम-क्रोध, लोभ, असंतोष आदि मानसिक विकारों का ताण्डव आज मनुष्य के मस्तिष्क को इतना अधिक अशान्त बना चुका है कि उसे प्रकृति के एक स्वाभाविक अवदान, वरदान नींद के लिए भी लालायित रहना पड़ता है। इतना ही नहीं, इसके लिए उसे कृत्रिम उपायों का भी अवलम्बन करना पड़ रहा है।

आज अकेले अमेरिका में ६० लाख ऐसे व्यक्ति हैं, जो नींद की दवा खाकर चारपाई पर पहुँचते हैं। हमारे अपने देश में भी (सही आँकड़ों के उपलब्ध न होने पर भी) यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि हजारों ही नहीं लाखों की संख्या में ऐसे धनी व शिक्षित व्यक्ति हैं, जिन्हें नींद न आने की शिकायत रहती है और आधी रात के बाद तक तारे गिनने के बाद बेचारों को कहीं थोड़ी-बहुत नींद आ पाती है। मनोचिकित्सा एवं मनोविज्ञान के अनुसार चिंता और डिप्रेशन नींद न आने की एक बड़ी वजह है। डिप्रेशन और नकारात्मक सोच के कारण भी नींद नहीं आती।

उचित नींद न आने के दुष्प्रभाव :

नींद चूंकि शरीर की एक स्वाभाविक माँग है; अतः जब कभी नींद में विघ्न पड़ जाता है, वक्त पर नींद नहीं आती या अपेक्षित मात्रा में नींद नहीं आती, तो अविलम्ब ही शरीर और मन पर इसकी प्रतिक्रिया होने लगती है। जिस तरह उचित समय पर उचित आहार नहीं मिलता, तो शरीर के अंग-प्रत्यंग पर उसका असर तत्काल होने लगता है, ठीक उसी तरह नींद की कमी का असर भी तत्काल ही होता है। इसलिए आयुर्वेद में नींद को एक स्वाभाविक देन भी माना गया है और इस वेग को रोकने से होने वाली हानियों की चर्चा भी स्पष्ट शब्दों में की गई है।

वाग्भट ने बताया है-नींद के अभाव से मन में मोह, मस्तक और आंखों में भारीपन, सारे शरीर में आलस्य, जंभाई और शरीर के टूटने-जैसी खराबियाँ होने लगती हैं। इसी ग्रन्थ में यह भी कहा गया है-शारीरिक जड़ता के साथ मानसिक ग्लानि होने लगती है, मस्तिष्क की विचार-शक्ति में भ्रम होने लगता है, पेट की पाचन-शक्ति अव्यवस्थित होने लगती है, तन्द्रा बनी रहती और वात-सम्बन्धी अनेक रोगों की उत्पत्ति की भूमिका तैयार होने लगती है।

नींद कैसे आये?:-

पुराने और नये चिकित्सा-शास्त्र तथा अनुभवी विद्वानों ने निद्रा देवी को प्रसन्न करने के लिए जो साधन निश्चित किये हैं, उनका निष्कर्ष यह है कि-

''आफिस, दुकान या काम से लौटते समय अपनी सब प्रकार की चिन्ताओं को बाहर रखकर प्रसन्न चित्त से घर में प्रवेश कीजिये। घर की लक्ष्मी और आंगन की शोभा स्वरूप अपने बच्चों के साथ थोड़ा दिल बहलाइए, समय पर खाना खाइए, थोड़ा टहलिये और उचित समय पर शान्त मन से चारपाई पर लेट जाइए।''

अपने जीवन को सादा रखिये। सादा भोजन और उच्च विचार रखने पर नींद को बुलाने की जरूरत नहीं होगी, वह स्वयं आकर उपस्थित हो जायेगी।

दिनचर्या के सभी काम-सोना, उठना, नहाना, धोना, आफिस जाना आदि नियमित और व्यवस्थित होने चाहिएं।

सोने के कम से कम एक -डेढ़ घंटा पहले भोजन कर लीजिए और शय्या पर पहुँचने के समय प्रसन्न मन रहिए। अपने दिमाग से इस बात को दूर भगा दीजिए कि नींद नहीं आएगी, बल्कि यह समझिये कि नींद स्वयं आपकी प्रतीक्षा कर रही है। दिमाग को एकदम शान्त रखकर आप ईश्वर का स्मरण करते हुए सो जाइए।

शरीर को ढीला छोड़ने से भी नींद जल्दी आती है-पैरों के पंजों से लेकर घुटने, जाँघ, पेट, पीठ, गर्दन तक सभी

अंगों को ढीला रखिए। आराम से सांस लेना शुरू कर दीजिए। कान, नाक, आंख और मस्तक की नसों को पूरी तरह ढीला कर दीजिए और शान्ति के साथ आंखें बन्द कर लीजिए।

पैरों के तलवों में सरसों के तेल की धीमी-धीमी मालिश भी नींद को जल्द बुला देती है।

नियमित रूप से सन्ध्या-गायत्री के मन्त्र का जाप करने से विचारों की शुद्धि होकर मीठी नींद आने लगती है। नींद के लिए शारीरिक श्रम-व्यायाम भी आवश्यक है। यों तो शारीरिक परिश्रम, स्वास्थ्य के लिए ही नहीं, जीवन के लिए भी आवश्यक है। फिर भी अनिद्रा के रोगियों के लिए तो इसकी बहुत ही अधिक जरूरत होती है।

शरीर की मांस पेशियों की हरकत अपने आप में ही एक सुन्दर कला है। यह शरीर को सुन्दर, स्वस्थ, बलवान और स्फूर्तिशील बनाती है। व्यायाम के द्वारा-चाहे वह कसरत के रूप में हो, या कबड्डी, क्रिकेट, फुटबाल अथवा तैरने, दौड़ने या तेजी से घूमने के रूप में हो- जहां ठीक भूख लगती है, फुर्ती आती है, वहां शरीर में ऐसी मीठी हल्की थकान भी आती है कि नींद आने में बड़ी मदद मिल जाती है। यही वजह है कि शरीर से श्रम करने वाले किसान या मजदूर को रात होते ही निद्रा का निमन्त्रण अपने आप मिल जाता है।

व्यायाम का सबसे बड़ा असर तो यह होता है कि दिमाग में उठने वाले मानसिक विकार अपने आप ही दूर भाग जाते हैं, जिससे हल्के दिमाग पर नींद का असर अपने आप, ठीक समय पर होने लगता है।

विचारों की शुद्धि, संयमित जीवन, परिश्रम, मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाता है और ऐसी दशा में मानसिक प्रफुल्लता अपने आप ही बनी रहती है। फिर न तो अनिद्रा का डर रहता है, न मानसिक विकारों का और न बेईमानी या पाप का। अतः ठीक से नींद लेने के लिए अपने आपको प्रसन्न व निश्चिंत रखने का अभ्यास डालना ही चाहिए।

लू (सनस्ट्रोक) आतपघात

❑**डॉ० नरेश सिहाग 'बोहल'** गुगन निवास २६ पटेल नगर भिवानी-१२७०२१

ग्रीष्म ऋतु में अधिक धूप पड़ती है और हमें चाहते, न चाहते धूप में स्वाभाविक रूप से इधर-उधर आना-जाना पड़ता है और बहुधा हमें लू लग जाती है।

लू लगने के लक्षण= पसीना न आना, चेहरा लाल हो जाना, अत्यन्त तीव्र ज्वर(बुखार), नाड़ी का तेज चलना, चक्कर आना आदि लू लगने के लक्षण है।

लू से बचाव=

* जल(पानी) पर्याप्त मात्रा में पीकर बाहर निकलने से लू नहीं लगती।
* निराहार घर से न निकले। भोजन करके ही बाहर जाये।
* घर से बाहर जाते वक्त सिर पर कपड़ा रखे।
* प्याज, कैरी, नमक आदि का प्रयोग करे।

लू लगने पर उपाय=

* रोगी को तुरन्त छायादार व खुले स्थान पर ले जायें।
* रोगी के वस्त्र ढीले पहनायें व कर दे।
* मस्तिष्क पर शीतल वस्त्र का प्रयोग करे अर्थात् गीला कपड़ा रखे।
* ज्वर आने पर डाक्टर से जल्दी सम्पर्क करे, देर न करे।

लू की घरेलू चिकित्सा=

प्याज- लू लगने पर प्याज के रस की कनपटियों और छाती पर मालिश करने और पीने से लाभ होता है। गर्मी में प्याज नित्य प्रयोग करे।

धनिया- धनिये के पानी में चीनी मिलाकर पीना चाहिये।

इमली- लू लगने पर पकी हुई इमली के गूदे को हाथ और पैरों के तलवों पर मलने से लू का प्रभाव समाप्त होता है। इमली के पानी में गुड़ मिलाकर पीना अधिक लाभप्रद है।

तुलसी-तुलसी के पत्तों का रस ५ बूंद, चीनी एक चम्मच पानी आधा कप में मिलाकर पिलाने से लू नहीं लगती, लू लगने पर लाभ होता है। चक्कर नहीं आते।

पानी- गर्मी में रूचि के अनुसार बारम्बार पानी-पीने से लू नहीं लगती।

❖गर्मी के मौसम में शरीर में पानी की कमी न हो इसलिए तरबूज, ककड़ी, खीरा खाना चाहिए। इसके अलावा फलों का जूस लेना भी फायदेमंद है।

❖पानी में ग्लूकोज मिलाकर पीते रहना चाहिए। इससे आपके शरीर को उर्जा मिलती है जिससे आपको थकान कम लगती है।

❖लू से बचने के लिए बेल या नींबू का शर्बत भी पीया जा सकता है। यह आपके शरीर में पानी की कमी को पूरा करता है।

❖बाहर से आने के बाद तुरंत पानी नहीं पीएं। जब आपके शरीर का तापमान सामान्य हो जाए तभी पानी पीएं।

जानते हो!

❏आस्था आर्या

📖साइकिल का आविष्कार किर्क पैट्रिक मैकमिलन ने किया था।

📖दक्षिण अफ्रीका की दो राजधानियाँ हैं–प्रिटोरिया (प्रशासकीय) और केप टाऊन (संसदीय)

📖स्विट्जरलैंड में निर्मित घड़ियाँ सबसे ज्यादा पसंद की जाती हैं।

📖मद्रास का नाम सन् 1996 में चेन्नई रखा गया।

📖स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की समाधि का नाम वीरभूमि है।

📖भारतीय मुद्रा का नाम रुपया सबसे पहले शेरशाह सूरी ने 1541 में रखा था।

📖सूर्य का प्रकाश जल में अधिकतम 400 मीटर तक जा सकता है।

☺☺☺हास्यम्☺☺☺

प्रस्तुति : कीर्ति कटारिया बाबू

❖अनु– चलो चाचू, ताजी हवा खाकर आएँ।
हरसी– नहीं पुत्तर, आज मेरा व्रत है।

❖टिकट चैकर– भाई साहब टिकिट दिखाईये।
यात्री–यह लीजिए।
चैकर– पर यह तो पुराना है।
यात्री– तुम्हारी रेल कौन सी नई है? यह भी तो पुरानी है।

❖कंजूस– क्या आप ही वे व्यक्ति हैं, जिसने मेरे बेटे को डूबने से बचाया?
व्यक्ति– अरे, वह तो मेरा फर्ज था।
कंजूस– फर्ज की छोडिए, वह जूता लाईये, जो उसने पहन रखा था।

❖अध्यापक–बताओ, अकबर की मृत्यु के बाद क्या हुआ?
प्रतीक–होना क्या था सर, लोगों ने उसे दफना दिया।

❖एक व्यक्ति (डाक्टर से)–मुझे खाना खाने के बाद भूख नहीं लगती।
डाक्टर–ये लो दो पुड़िया–एक सोने के बाद खा लेना और दूसरी जगाने से पहले।

❖एक पागलखाने में एक पागल पत्र लिख रहा था। यह देखकर डाक्टर ने पूछा–क्यों भाई, किसे पत्र लिख रहे हो?
पागल– अपने आप को लिख रहा हूँ।
डाक्टर– क्या लिख रहे हो?
पागल– अभी पत्र मुझे मिला ही कहाँ है, जो मैं जान लूँ कि क्या लिखा है।

बाल वाटिका

प्रहेलिका:

❏सुमेधा

☯ एक चीज सबके मन भाई।
जिसने चाही पकड़ चलाई।।

☯पानी में इठलाता जाता देखा एक बताशा,
हवा लगी तो नजर न आया, देखो अजब तमाशा।

☯पानी में जो दौड़ लगावे, रही उसी में खड़ी,
जब पानी से बाहर आई मरी हुई सी पड़ी।।

☯बाहर पानी भीतर पानी,
बीच में जिसकी काया,
बड़े चाव से जिसने पाया,
तोड़ तोड़कर खाया।

☯चौड़ा मुंह टेढी पूंछ, चले जब चलाए।
इसने अनेक वृक्ष जड़ से ही उड़ाए।

☯खेत में उगी सभी ने खाई।
घर में घुस गई हुई लड़ाई।।

☯मुंह कम चौड़ा मोटा पेट,
बैठा रहे सके नहीं लेट।

☯पेट में पानी सिर पर आग,
बीन बजाई निकला नाग।

झाड़ू /बुलबुला/नाव/नारियल/खुरपी/फूट/घड़ा/हुक्का

विचार कणिका:

❏प्रतिष्ठा

❖आपको क्रोधित होने के लिए दंड नहीं दिया जायेगा, बल्कि आपका क्रोध खुद आपको दंड देगा।

❖निष्क्रिय होना मृत्यु का एक छोटा रास्ता है, मेहनती होना अच्छे जीवन का रास्ता है, मूर्ख लोग निष्क्रिय होते हैं और बुद्धिमान लोग मेहनती।

❖बोलते समय अपने शब्दों को देखभाल कर चुनना चाहिए कि सुनने वाले पर उसका क्या प्रभाव पड़ेगा।

❖आपको जो कुछ मिला है उस पर घमंड न करो और न ही दूसरों से ईर्ष्या करो, घमंड और ईर्ष्या करनेवाले लोगों को कभी मन की शांति नहीं मिलती।

❖स्वयं पर यकीन करो, दूसरों पर निर्भर मत रहो।

❖असल जीवन की सबसे बड़ी विफलता है हमारा असत्यवादी होना।

❖फूल की गंध को मिट्टी ग्रहण कर लेती है, परन्तु मिट्टी की गंध को फूल धारण नहीं करते।

माँ की महत्ता

एक व्यक्ति कहीं जा रहा था। उसने एक महात्मा जी को देखा जो ईश्वर के ध्यान में लीन थे। उसने सोचा कि महात्मा जी से कुछ ज्ञान लेता हूँ। वह महात्मा जी के सम्मुख जाकर बैठ गया। जब महात्मा जी की आँखें खुलीं तो उन्होंने पूछा– क्या कष्ट है बेटा। उस व्यक्ति ने कहा कि महात्मा जी मुझे मेरे एक प्रश्न का उत्तर चाहिए। मैं यह जानना चाहता हूँ कि माता को संसार में सबसे ऊँचा स्थान क्यों दिया गया है?

महात्मा जी ने कुछ सोचकर कहा– बेटा, एक २ किलोग्राम का पत्थर उठा लाओ, तभी मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे पाऊँगा। वह व्यक्ति संकोच करता हुआ एक पत्थर उठा लाया। महात्मा जी ने उसे अपना एक कपड़ा दिया और कहा– इस पत्थर को इस कपड़े में लपेटकर अपने पेट पर बांध लो। वह चकित होकर बोला– महात्मा जी, इसका मेरे प्रश्न से क्या संबंध है? महात्मा जी ने कहा– अगर अपने प्रश्न का उत्तर चाहते हो तो जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करो। यह पत्थर सात दिन तक पेट से खोलना नहीं है। सातवें दिन मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूँगा।

वह व्यक्ति सोचने लगा कि किस बला से पाला पड़ गया। और पत्थर पेट पर बांधकर घर आ गया। कुछ घण्टे बाद वह पत्थर उसे असहज लगने लगा। बैठने में दिक्कत होने लगी। खाना भी ठीक से नहीं खा पा रहा था। लेटने में भी परेशानी होने लगी। लेकिन महात्मा जी की आज्ञा थी कि सात दिन से पहले खोलना नहीं है, इसलिए पत्थर खोल भी नहीं पा रहा था।

उस व्यक्ति ने जैसे तैसे दो दिन निकाले और तीसरे दिन महात्मा जी के पास पहुंच गया। बोला– महात्मा जी, मुझे मेरे प्रश्न का जवाब नहीं चाहिए। मैं तो वैसे ही ठीक हूँ। महात्मा जी ने हँसकर कहा– क्यों क्या हुआ?

उस व्यक्ति ने अपनी पूरी आपबीती कह सुनायी। महात्मा जी बोले– बेटा, तुम दो दिन २ किलो का पत्थर अपने पेट पर बांध कर नहीं रख पाये। जरा सोचो, तुम्हारी माता ने नौ माह तुम्हें अपने गर्भ में रखकर सारे कार्य किये हैं। जो तकलीफ तुम दो दिन सहन नहीं कर पाये, तुम्हारी माता ने नौ माह खुशी खुशी सहन की है।

उस व्यक्ति ने भावुक होकर कहा– आप सत्य कह रहें है महात्मा जी! माता की तुलना संसार में किसी से नहीं की जा सकती। और माता का ऋण कभी उतारा नहीं जा सकता। अब मेरे प्रश्न का उत्तर मिल गया।

महकार सिंह जिज्ञासु

एक धोबी का गधा बहुत मरियल हो गया, धोबी ने उसे जंगल में ले जाकर छोड़ दिया। उसे हरी हरी ताजा घास खाने को मिली और मिली आजादी तो वह खूब मोटाताजा हो गया। जब उसे अपने मालिक की याद आती तो वह घबरा जाता था। एक दिन उसे एक शेर की खाल मिल गई। उसने वह खाल ओढ़ ली और लगा लोगों को डराने। वह किसी के खेत में जा घुसता और उजाड़ देता। किसान परेशान। शेर को कौन हाथ लगाए! आखिर एक बुद्धिमान किसान ने उसे ध्यान से देखा। उसे लगा कि इस शेर की खाल तो शेर जैसी है पर चाल तो शेर जैसी नहीं है। लेकिन उसे पक्का यकीन नहीं था और वह उसके पास जाने से डरता था। एक दिन कहीं से उसे गधे की खाल मिल गई। वह गधे की खाल ओढ़कर खेत में जा बैठा। शेर की खाल वाला गधा तो निडर होकर बैठा था। उसने एक और भाई को वहाँ बैठे देखा तो वह भूल गया कि वह नकली शेर है। वह अपने भाई को देखकर हुई खुशी को रोक नहीं पाया और जोर जोर से गाना शुरु कर दिया। बस, किसान को पक्का पता चल गया कि यह गधा है, उसने और उसके साथियों ने उसकी डण्डों से इतनी पिटाई की कि बच्चू को नानी का नाम याद आ गया।

–प्रतिभा

पानी है अन मोल ख जा ना।

पानी है अनमोल खजाना।
मत इसको बेकार बहाना।।
हर प्राणी का जीवन जल है।
यह धरती माँ का सम्बल है।।
जल की इक इक बूंद बचाना।।
मत इसको बेकार बहाना।।
जल अमृत है जल जीवन है।
यह सबसे अनमोल रतन है।।
सोच समझकर पीना खाना।
मत इसको बेकार बहाना।।

कुर्बानी

❐चौधरी पृथ्वीसिंह जी बेधड़क

देश धर्म पर जो मरता है उसकी कहानी ना जाती।
सारी दुनिया जानती है कुर्बानी छानी ना जाती।।

जो दाने मिट्टी में मिलते गलते हैं वे फलते हैं।
जो कल्लर में पड़े रहें उनको नित लोग मसलते हैं।
जिस लकड़ी पर रात और दिन खाती के आरे चलते हैं।
उस लकड़ी से एक रोज शाहों के तख्त निकलते हैं।
इतिहासों में तवारीख में उनकी निशानी ना जाती।।१।।

बरबादी में आबादी है यह दुनिया में सुनी गई।
बाड़ी की फुलवाड़ी में से प्रथम कपास चुनी गई।
चर्खी में से निकल निकल फिर धूने के घर धुनी गई।
बनकर सूत जुलाहों के घर जिसकी पगड़ी बुनी गई।
पगड़ी से बढ़कर दुनिया में इज्जत मानी ना जाती।।२।।

कुरबानी करने वाले प्रधान बना करते हैं।
अपने मुल्क की एक रोज वे शान बना करते हैं।
सारी दुनिया भर के वे मेहमान बना करते हैं।
राजा रानी के घर उनके पान बना करते हैं।
जो कह दिया वो होग्या उनकी खाली बानी ना जाती।।३।।

जिनके सीने तोप के आगे कभी अड़ाए जांगे।
उनके जीवन स्कूलों में रोज पढ़ाए जांगे।
उनके फोटू रतन जड़ित शीशों में जड़ाए जांगे।
उनकी समाधि पर एकदिन फल फूल चढ़ाए जांगे।
पृथ्वीसिंह बिन ज्ञान तेरी कविता पहचानी ना जाती।।४।।

बहनों का गीत तर्ज : सामण आया

❐सहदेव समर्पित

वैदिक सत्संग हे मां मेरी हो रहा री,
हेरी चलो सुने वेद प्रचार, वेदाचारी आ रहे री।।
ओम नाम का हे मा मेरी आसरा री,
जिने रचा सकल संसार, ऋषि मुनि गुण गा रहे री।।
वेद की पुस्तक हाथ मैं री,
हेरी वें तो करते मंत्रोच्चार, रंग अनोखे छा रहे री।।
स्वाहा स्वाहा हे मां मेरी हो रही री,
हेरी हुई हवन की धुंवाधार, रोग शोक कुछ ना रहे री।।
बच्चे बूढ़े ज्वान सब री,
हेरी सब मिलकर के नरनार, नारे लाते जा रहे री।।
ऋषि दयानन्द देव था री,
अरी जिनै कर दिया देश सुधार,गीत समर्पित गा रहे री।।

परमपिता से प्यार नहीं

❐पं० नरदेव जी भरतपुर

परमपिता से प्यार नहीं, शुद्ध रहा व्यवहार नहीं,
इसीलिए तो आज देख लो सुखी कोई परिवार नहीं!

अन्न फूल फल सेवाओं को, समय समय पर देता है,
लेकिन है आश्चर्य यही बदले में कुछ नहीं लेता है!
करता है इंकार नहीं, भेदभाव तकरार नहीं,
ऐसे दानी का ओ बंदे, माने तू उपकार नहीं।।१।।

जल वायु और अग्नि का वह लेता नहीं किराया है,
सर्दी गर्मी वर्षा का अति सुंदर चक्र चलाया है।।
लगा कहीं दरबार नहीं, कोई सिपहसालार नहीं,
कर्मों का फल देता सबको रिश्वत की सरकार नहीं।।२।।

मानव चोले में ना जाने, कितने यंत्र लगाए हैं।
कीमत कोई माप सका ना, ऐसे अमूल्य बनाए हैं।।
करता है इंकार नहीं, भेदभाव तकरार नहीं,
ऐसे कारीगर का बंदे, करता जरा विचार नहीं।।३।।

सूर्य चंद्र तारों का जाने कहाँ बिजली घर बना हुआ,
पल भर को नहीं धोखा देते, कहाँ कनेक्शन लगा हुआ।
खम्बे और कोई तार नहीं, खड़ी कोई दीवार नहीं,
ऐसे शिल्पकार का करता ऐ **'नरदेव'** विचार नहीं।।४।।

कौन कहे आज का जमाना है बुरा।

❐स्व० पं० चन्द्रभानु जी आर्य भजनोपदेशक

कौन कहे आज का जमाना है बुरा।
जमाने को ऐसे दोष लाना है बुरा।।

कब कहता जमाना दारु पीकर झूठ बोल तू।
कब कहता जमाना बुरे कार्यों में डोल तू।।
यूँ ना कहते धोखा देना खाना है बुरा।।१।।

कब कहता जमाना पानी दूध में मिलाया कर।
लेकर पूरे दाम गरीब लोगों को पिलाया कर।।
पकड़ा जा तो कह रहा जुर्माना है बुरा।।२।।

कब कहता जमाना लेकर दिये ना उधार तू।
जहाँ पर भी फंसे वहाँ जाकर डाके मार तू।।
जेल जाते समय कहे थाना है बुरा।।३।।

समय और जमाना काल इनका अर्थ एक है।
जमाने को गाली दे जो उसको ना विवेक है।।
चन्द्रभान देश विरुद्ध गाना है बुरा।।४।।

इन्टरनेशनल कांफ्रेंस अटलांटा में लेक्चर देने अमेरिका जायेंगे आचार्य आनंद पुरुषार्थी

19 से 23 जुलाई तक अटलांटा में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। नर्मदांचल होशंगाबाद के वैदिक प्रवक्ता आचार्य आनंद पुरुषार्थी वहाँ इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे- 'वैदिक धर्म के अनुसार संतान के निर्माण में माता पिता का योगदान व उसका आज की पश्चिमी सभ्यता में अनुपालन'

आचार्य जी 27 जून को प्रस्थान करेंगे और 15 अगस्त को भारत लौटेंगे। लगभग डेढ़ माह अटलांटा, न्यूयार्क व शिकागो सहित अनेक आर्यसमाजो व परिवारों, संस्थाओं के बीच आनंद पुरुषार्थी के उपदेश यज्ञ, अनुष्ठान, प्रवचन होंगे। ६ यातव्य है वैदिक प्रवक्ता आचार्य आनंद पुरुषार्थी अब तक दुबई, मारीशास, होलेन्ड, सूरीनाम, फिजी, इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, बर्मा, थाईलेंड आदि देशों में जाकर वैदिक धर्म व आर्यसमाज का प्रचार कर चुके हैं।

रामावतार सिंह राजपूत मंत्री, आर्यसमाज होशंगाबाद

मुजफ्फरनगर में

शिवकुमार आर्य सम्मानित

दिनांक २० जून २०१८ को मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश में आदर्श शिक्षक राजकीय सम्मान, आर्य रत्न, तथा राष्ट्र सेवा सम्मान से सम्मानित श्री गुरुदत्त जी आर्य तथा आर्यसमाज नई मंडी मुजफ्फर नगर के प्रधान श्री आनन्द पाल जी आर्य द्वारा श्री शिवकुमार आर्य घरौंडा (स्वामी भीष्म जी के पौत्र, सुपुत्र स्व० श्री देवदत्त आर्य) को समाज, राष्ट्र सेवा व साहित्य सेवा के लिए किये कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मुजफ्फर नगर के अनेक गणमान्य आर्यो श्री RP शर्मा मंत्री आर्यसमाज, श्री मंगत सिंह आर्य, शहर के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री जगदीश प्रसाद जी, गोपाल स्वरूप आर्य, राजिंदर कुमार जी, प्रवक्ता पुष्पेंद्र जी, विजय आर्य जी तथा श्री सोमपाल जी आर्य प्रवक्ता ने फूलमाला पहना कर स्वागत व सम्मान किया। श्री शिवकुमार आर्य ने सभी महानुभावों का धन्यवाद करते हुए कहा कि इस सम्मान से उनका समाज सेवा का संकल्प और अधिक दृढ़ होगा।

विश्व पर्यावरण दिवस पर

जनहित विकास परिषद द्वारा ११ कुण्डीय यज्ञ का आयोजन

जींद, जनहित विकास परिषद् हरियाणा द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस ५ जून को स्थानीय जयन्ती देवी मन्दिर पार्क में ११ कुण्डीय यज्ञ के भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कोथ पीठाधीश महन्त शुक्राई नाथ योगी जी ने की। यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में शांतिधर्मी के सम्पादक सहदेव समर्पित ने यज्ञ सम्पन्न कराया। कार्यक्रम में नगर के गणमान्य व्यक्तियों विशेषकर युवाओं ने बहुत उत्साह से भाग लिया। महन्त शुक्राई नाथ जी ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा कि वैदिक संस्कृति विश्ववारा संस्कृति है। इसकी पुनर्स्थापना और प्रतिष्ठा के लिए इस प्रकार के आयोजन बहुत आवश्यक हैं। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे नशे और अंधविश्वासों से दूर रहकर अपने पूर्वजों के महान आदर्शों को अपनायें और अपना चरित्र निर्माण कर राष्ट्र-निर्माण में अपना योगदान करें। योगी जी ने कहा कि युवा अपने धर्म को समझने के लिये सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन अवश्य करें। शांतिधर्मी के सम्पादक श्री सहदेव समर्पित ने कहा कि यज्ञ न केवल आत्मिक उन्नति में सहायक है अपितु पर्यावरण शुद्धि का सबसे प्राचीन और अनुभूत प्रामाणिक उपाय भी है। उन्होंने यज्ञ की कुछ प्रक्रियाओं को स्पष्ट करते हुए कहा कि इसमें प्राणी मात्र के कल्याण और प्रसन्नता के लिय कार्य किया जाता है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण के लिए वृक्षों के साथ पशुओं का संरक्षण भी आवश्यक है। जनहित विकास परिषद के संयोजक केवल सिंह जुलानी ने संस्था द्वारा पर्यावरण और सामाजिक जागरूकता के लिए किये जा रहे कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। संस्था ने नगर और उसके आसपास सैंकड़ों त्रिवेणी लगाई हैं। लोगों के बीच जाकर बीजों, पक्षियों का पानी रखने के लिये कुण्डों का वितरण किया जाता है। इस अवसर पर श्री संदीप कुमार, श्रीमती सुमन मान, श्री दलबीर रजाना सहित अनेक विशिष्ट पर्यावरण सेवियों को सम्मानित किया गया। पक्षियों के लिए १०० के लगभग मिट्टी की कुण्डियाँ बांटी गईं। मास्टर रायसिंह जी आर्य ने वानप्रस्थ लेने की घोषणा की। संस्था के पदाधिकारियों- सर्वश्री सत्यवान सांगवान, नरेन्द्र छापड़ा, कपूर ढांडा, धर्मराज, सुरेन्द्र मोर, रणवीर फोगाट आदि ने कार्यक्रम की सुफलता के लिए परम पुरुषार्थ किया। श्री सुभाष ढिगाना, नवीन दहिया, डॉ० अश्विनी कुमार, डॉ० शीला देवी, डॉ० रवीन्द्र कुमार, बलराज सांधु, जोगेन्द्र सान्धु, देवेन्द्र आर्य, विरेन्द्र लाठर, महेन्द्र सिंह रिढाल, सतबीर पहलवान, पवन रेढू, भीमसिंह आदि उपस्थित रहे।

डॉ० नरेश सिहाग एडवोकेट सम्मानित

विलक्षणा : एक सार्थक पहल समिति द्वारा १० जून को रोहतक हरियाणा मे आयोजित एक भव्य सम्मान समारोह मे प्रदेश के सहकारिता मंत्री श्री मनीष ग्रोवर, फिल्म अभिनेता श्री यशपाल शर्मा, श्री दादा जगन नाथ जी, लोक गायक श्री महावीर गुड्डू, समिति अध्यक्ष डॉ० सुलक्षणा श्री विकास शर्मा ने बोहल शोध मंजूषा जर्नल के सम्पादक डॉ० नरेश सिहाग एडवोकेट को साहित्य, शोध व जन सेवा के क्षेत्र मे उल्लेखनीय योगदान के लिए 'समाज सारथी' सम्मान २०१८ दे कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर देश के विभिन्न प्रदेशों से आई हुई १०१ प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया ।

–मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

जींद में तीन दिवसीय वेदप्रचार

जींद, आर्यसमाज रेलवे रोड जींद जंक्शन के तत्त्वावधान में तीन दिवसीय वेद प्रचार कार्यक्रम का आयोजन १ से ३ जून तक किया गया। आचार्य शिवदेव के वेद प्रवचन और भजनोपदेशिका संगीता आर्या के मधुर भजनों से श्रोताओं ने प्रेरणा प्राप्त की। एक दिन की सभा में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महामंत्री श्री उमेद शर्मा जी ने भी उद्बोधन प्रदान किया। वेद प्रचार मण्डल के संरक्षक मा० रायसिंह आर्य, प्रधान ईश्वर आर्य, स्थानीय आर्य संस्थाओं के सदस्यगण और श्रद्धालुओं ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम का संयोजन मंत्री मा० पृथ्वीसिंह मोर ने किया तथा प्रधान मा० सतबीर जुलानी ने सभी महानुभावों का आभार प्रकट किया।

श्रुति धाम कन्या गुरुकुल

भड़ताना (जींद)

(दूरभाष- 98129 24035)

- ❖शिक्षा स्वास्थ्य एवं चरित्र निर्माण का केंद्र
- ❖पांचवी से ९ वीं कक्षा तक प्रवेश आरंभ
- ❖शुद्ध एवं सुसंस्कारित वातावरण
- ❖छात्राओं के भोजन के लिए जैविक अन्न व गौ दुग्ध की उत्तम व्यवस्था।
- ❖गुरुकुल चोटीपुरा से शिक्षित-शिक्षिकाएं
- ❖प्रवेश परीक्षा के आधार पर होगा

संस्थापक
आचार्य आत्म प्रकाश जी
कुलपति गुरुकुल कुंभाखेड़ा
हिसार

प्रबंधक
डॉक्टर सुमेधा जी एवं
डॉक्टर सुकामा जी
कन्या गुरुकुल चोटीपुरा

वैदिक शोध केन्द्र संस्थान
(रिसर्च सेंटर फॉर वैदिक स्टडीज)

एक महायज्ञ का शुभारम्भ

मित्रों बहुत समय से मेरे मन में एक शोध केंद्र की स्थापना का विचार आ रहा था। अब इस कार्य को आरम्भ करने का संकल्प लिया है। इस केंद्र का उद्देश्य इस प्रकार होगा।

१- वेद, स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज से सम्बंधित विषयों पर शोध/अनुसन्धान को गति देना।

२- आर्यसमाज के विस्तृत साहित्य को एकत्र कर एक बृहद् पुस्तकालय के रूप में संग्रहीत करना।

३- महत्त्वपूर्ण एवं लुप्तप्रायः पुस्तकों का Digitisation अर्थात् अंकीकरण कर उन्हें सभी के लिए सुलभ करना।

४- इस केंद्र को विश्वविद्यालयों में स्थापित दयानन्द चेयर, संस्कृत विभाग, इतिहास विभाग आदि से सलंग्न कर शोधार्थियों को सहायता देना।

५- पूर्व प्रकाशित महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का पुनः प्रकाशन एवं विभिन्न विषयों पर नवीन पुस्तकों का प्रकाशन करना।

६- सोशल मीडिया में वैदिक सिद्धांतों का विभिन्न प्रकार से प्रचार करना।

७- पुस्तक मेलों में आर्यसमाज की भागीदारी को बढ़ाना।

८- वैदिक सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर की वेबसाइट का संचालन करना।

९- देश/ विदेश की विभिन्न भाषाओं में वैदिक साहित्य का अनुवाद करना और उसे प्रकाशित करना।

१०- नई पीढ़ी के लेखकों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए मंच उपलब्ध करवाना।

वर्तमान में १० अलमारियों में करीब २५०० विभिन्न भाषाओं की पुस्तकों का संग्रह मैंने इस केंद्र में किया है। मेरे पास करीब ५० अलमारियों को रखने की व्यवस्था है। दुर्लभ साहित्य संग्रह में सहयोग के इच्छुक सज्जन मुझसे व्यक्तिगत सम्पर्क करें। धन्यवाद

निवेदक

डॉ० विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ, दिल्ली
एडमिन – facebook.com/arya-samaj
blog : vedictruth.blogspot.in
Email : **drvivekarya@yahoo.com**

वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा सांस्कृतिक संन्ध्या आयोजित

जींद, वनवासी कल्याण आश्रम हरियाणा द्वारा संचालित छात्रावासों के छात्रों की सांस्कृतिक सन्ध्या का आयोजन जींद स्थित गोपाल विद्या मन्दिर के प्रांगण में गत १७ जून को किया गया। कार्यक्रम में श्री नरेन्द्र जी गर्ग, देवेन्द्र चतुर्भुज अत्री, श्री मुकेश गोयल, प्रो॰ दलीपसिंह जी हुड्डा, श्री कृष्ण लाल बंसल, डॉ॰ विनोद गुप्ता आदि गणमान्य व्यक्तियों के सान्निध्य में बड़ी संख्या में नागरिकों ने आश्रम द्वारा संचालित छात्रों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनन्द लिया। जींद अध्यक्ष श्री संजीव जिन्दल व संयोजक श्री बी एस गर्ग के सद्प्रयासों से कार्यक्रम अत्यंत आकर्षक व प्रभावशाली रहा। कार्यक्रम ने वनवासियों और नागरिकों के मध्य सांस्कृतिक सेतु का कार्य किया। छात्रों द्वारा प्रस्तुत मार्शल आर्ट व लोकनृत्य विशेष आकर्षण का केन्द्र रहे। छात्रों को भी राष्ट्र की मुख्यधारा में जुड़े होने का अहसास हुआ और उनका उत्साहवर्धन हुआ।

विशिष्ट अतिथि गौसेवा आयोग हरियाणा के सदस्य श्री श्रवण गर्ग को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते सरंक्षक श्रीमान नरेंद्र जी ओर नगर अध्यक्ष श्री संजीव जिंदल जी

वरिष्ठ साहित्यकार नरेन्द्र अत्रि सम्मानित

हिंदी व हरियाणवी के वरिष्ठ साहित्यकार नरेंद्र अत्रि को 'विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति' के द्वारा 'विलक्षणा समाज सारथी सम्मान २०१८ 'से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें १० जून को समिति द्वारा रोहतक में आयोजित राष्ट्रीय स्तर के सम्मान समारोह में दिया गया। इस आशय की जानकारी देते हुए हरियाणा के जाने माने साहित्यकार समीक्षक रामफल सिंह खटकड़ ने बताया कि इस सम्मान समारोह में देश भर से विभिन्न क्षेत्रों में सराहनीय कार्य करने वाले १०१ व्यक्तियों को सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें हरियाणा के सहकारिता मंत्री श्री मनीष ग्रोवर तथा फिल्म जगत हरियाणा की हस्ती यशपाल शर्मा के हाथों प्रदान किए गए।

रामफल सिंह खटकड़ ने बताया कि नरेंद्र अत्रि को यह सम्मान उनके श्रेष्ठ साहित्य सृजन के लिए दिया गया। ज्ञात रहे कि नरेंद्र अत्रि हिंदी व हरियाणवी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं। अभी तक उनके द्वारा रचित सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा दो पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। इनके लेखन में काव्यसंग्रह, प्रबंध काव्य, गजल संग्रह, बालगीत, व्यंग्य लेख तथा रेडियो नाटक सम्मिलित हैं। आकाशवाणी पर प्रोग्राम कम्पियर व नाटक कलाकार रहे नरेंद्र अत्रि आज भी दूरदर्शन व आकाशवाणी के अलावा अनेक मंचों से काव्य पाठ करते रहते हैं। महाविद्यालयों व स्कूल स्तर के अनेक कार्यक्रमों व साहित्यिक प्रतियोगिताओं में निर्णायक की भूमिका निभा चुके नरेंद्र अत्रि का कई साहित्यिक व सामाजिक संस्थाओं के साथ सक्रिय जुड़ाव है। वर्तमान में हिंदी साहित्य प्रेरक संस्था जींद के वरिष्ठ उपाध्यक्ष के दायित्व का निर्वाह कर रहे नरेंद्र अत्रि ने जींद में हरियाणा का पहला हिंदी भवन बनवाने में विशेष भूमिका निभाई। इन्हें हरियाणा ग्रंथ अकादमी द्वारा 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय ग्रंथ श्री सम्मान' के अलावा प्रदेश की कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। जींद के अनेक साहित्यकारों ने उनको 'विलक्षणा समाज सारथी सम्मान–२०१८' दिए जाने पर बधाई दी है।

सुभाष सांगवान जी को पितृशोक

वेद प्रचार मंडल रोहतक के प्रधान श्री सुभाष सांगवान के पूज्य पिताश्री एवं आर्यसमाज के अत्यधिक कर्मठ अनुयाई, ऋषि दयानंद सरस्वती के दृढ़ अनुयायी, हर पल परमपिता परमेश्वर से जुड़े रहने वाले श्री प्रताप सिंह शास्त्री सुपुत्र श्री अमर सिंह गांव नलखेड़ा सोनीपत का दिनांक २९ मई २०१८ को ९० वर्ष की आयु में प्रातः ३:४५ पर उनके निवास स्थान तिलक नगर रोहतक में देहावसान हो गया। २९ मई को प्रातः ११:०० बजे शीला बाईपास रामबाग में वैदिक विद्वानों द्वारा मंत्रोच्चार के साथ उनका अंतिम संस्कार हजारों व्यक्तियों की उपस्थिति में किया गया। वे अध्यापक के कार्य से सेवानिवृत्त होकर वैदिक मान्यताओं के प्रचार प्रसार में जुट गए। १९८१ से रोहतक में निवास करने लगे। उन्होंने रोहतक शहर और आसपास के गांवों में यज्ञ परंपरा को बढ़ावा दिया। वे वैदिक संस्कृति की प्रतिष्ठा के लिये यज्ञ का प्रचार करने की आवश्यकता अनुभव करते थे और इसके लिये दूसरों को भी प्रेरित करते रहते थे। वे वैदिक साहित्य स्वयं खरीदकर जिज्ञासुओं को निःशुल्क वितरित करते थे। उनका जीवन बहुत ही सात्त्विक और परोपकारी था। शांतिधर्मी परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजली।

मोहदीनपुर में शिविर आयोजित

आर्य समाज मोहदीनपुर जिला रेवाड़ी हरियाणा द्वारा आर्य वीर दल के आवासीय शिविर का आयोजन किया गया जिसमें ५० आर्यवीरों ने यज्ञोपवीत धारण किया। शिविर में युवाओं को व्यस्त नियमित दिनचर्या द्वारा संन्ध्या हवन, योग, आसन प्राणायाम, आत्म रक्षा का प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर महात्मा यशदेव जी अध्यक्ष वेद प्रचार मण्डल रेवाड़ी, दिनेश आर्य, राजकुमार आर्य, अशोक आर्य, प्रो० धर्मवीर जी, राजेन्द्र जी, प्रदीप डागर उपस्थित रहे।

–प्रमिल कुमार 'भाई'

धर्मान्तरण को बढ़ावा देना बन्द करे सरकार : ठाकुर विक्रम सिंह

जब हम प्रतिदिन दिल्ली की सड़कों से गुजरते हैं तो बड़ा ही गुस्सा आता है कि रास्ते में जगह-जगह केन्द्र सरकार की मुस्लिम प्रचार सामग्री के बोर्ड लगे हुये हैं। आईटीओ के पास से लेकर दिल्ली में हर जगह ऐसी सूचना के बोर्ड लगे हुये हैं। इन बोर्डों में दिखाया गया है कि मुस्लिम आबादी की हैसियत बढ़ाने के लिए, मुसलमान युवकों को रोजगार देने के लिए मोदी सरकार कितना कटिबद्ध है, मुस्लिम कामगारों को ब्याज मुक्त कर्ज दिया जा रहा है, आईएएस की तैयारी करने वाले मुस्लिम छात्रों को एक-एक लाख रुपये दिये जा रहे हैं, वे भी अनुदान स्वरूप। इस प्रकार यदि आप मुस्लिम हैं तो आईएएस की तैयारी के नाम पर भारत सरकार से एक लाख रुपये हड़प सकते हैं।

इस विज्ञापन से प्रेरित होकर कुछ हिन्दू स्कूल-कालेजों के हिन्दू लड़के/लड़कियां अपना धर्म परिवर्तन कर सकते हैं। उनसे पूछने पर उनका तर्क था कि हमें धर्मपरिवर्तन कर मुस्लिम या अल्पसंख्यक बनने से व्यापार, कारोबार के लिए मुफ्त में बिना ब्याज के लोन मिल जाएगा अथवा आईएएस की पढ़ाई करते हैं तो १ लाख रूपए का अनुदान मोदी सरकार द्वारा मुफ्त मिलेगा। हिन्दू बने रहने से तो हमें बस सरकार की गालियां, पुलिस की लाठियां व नौकरियों के लिए धक्के खाने के सिवाए कुछ नहीं मिलना है। समस्त हिन्दू संगठनों को इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि वह तुरंत प्रभाव से इस भ्रामक व राष्ट्रीय एकता को हानि पहुंचाने वाले तथा धर्मान्तरण को बढ़ावा देने वाले कार्य को बंद करे।

ठाकुर विक्रम सिंह (राष्ट्रीय अध्यक्ष)
राष्ट्र निर्माण पार्टी, ए-41, लाजपत नगर, नई दिल्ली-२४
Email- rashtranirmanparty@gmail-com,
011-45791152, 29842527, 9599107207, 9213956360

दिव्य मातृत्व से ही (पृष्ठ १३ का शेष)

दिया। 'चिन्ता करितो विश्वाची' कहने वाले बालक नारायण की माँ सूर्य की उपासना करती थी। सूर्योपासक माता राणुबाई ने सूर्यसम दिव्य, तेजस्वी, विश्व की चिन्ता करने वाले सुपुत्र को जन्म दिया। यही बालक स्वामी रामदास के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कहने का तात्पर्य है कि ऐसे अनेक उदाहरण हमारे इतिहास के पृष्ठों में छिपे हैं, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि माता के प्रत्यनों के परिणामस्वरूप बालक का वैसे ही निर्माण हुआ, जैसा वह चाहती थी।

माँ मार्गदर्शक होती है। वह जैसा चित्र बालक के मानस पर अंकित करती है, बालक वैसा ही बनता है। एक बार बातों-बातों में बालक नरेन्द्र ने कह दिया कि मैं तो कोचवान बनूँगा। ममतामयी माँ ने तुरन्त स्थिति को संभालकर कहा- ठीक है, तुम कोचवान ही बनना परन्तु श्रीकृष्ण जैसे। इतना कहकर उन्होंने अर्जुन का रथ हाँकते श्रीकृष्ण का चित्र दिखाया। हम देखते हैं कि स्वामी विवेकानन्द के रूप में जाना जाने वाला यह बालक हिन्दू तत्त्व चिन्तन का सारथी बना और उसकी गूँज को विश्व गगन में फैला दिया।

हर महान व्यक्तित्व के पीछे एक माँ छिपी है और छिपा है उसका ममत्व। श्रेष्ठ सन्तति के निर्माण हेतु माता का संस्कारित होना देश की आवश्यकता है। इसलिए आज बालिकाओं की शिक्षा किस प्रकार की हो, यह विचार होना चाहिए। उसके मन में स्त्रीत्व के प्रति हीन भावना न हो। उसे अपने नारी होने पर गर्व हो तथा वह स्वयं कन्या के प्रति जाग्रत हुई अनवस्था को दूर कर उसमें भावी माता के संस्कारों को भरने के प्रति सजग बने।

आज की माताओं को विचारना है कि उन्हें कैसा साहित्य पढ़ना है। घर का वातावरण कैसा हो? उसके हृदय में वर्तमान परिस्थिति के अनुसार भव्य दिव्य राष्ट्र की परिकल्पना एवं भक्ति कैसे जाग्रत हो? तभी वह भावी नागरिक को धर्माभिमुख, कर्त्तव्य तत्पर एवं राष्ट्र के प्रति सजग बना सकती है। खाओ, पीओ, मस्त रहो- यह अपने देश की संस्कृति में नहीं है। अपनी संस्कृति में पर के लिए अर्थात् समाज, राष्ट्र, परिवार के लिए जीने की अवधारणा है। मातृत्व का गौरव शृंगार भोग-विलास के मार्ग से प्राप्त हुआ जीवन का प्रसंग नहीं है, अपितु समझ-बूझकर स्वयं स्वीकारा हुआ एक महान पवित्रतम क्षण है। यह सच है कि कौशल्या केवल रानी होती और भोग-विलास में मस्त रहकर संतान को जन्म देती तो संतान राम न बनकर कुछ और होती। श्रीराम माता कौशल्या के संस्कारों का प्रतिफल है। हमारे देश की माताओं को भोगवादी संस्कृति से दूर रहना होगा। एक रोटी को बाँटकर खाने की प्रेरणा माँ ही अन्तःकरण में जाग्रत करती है। जब यहाँ के नागरिक भोगवाद से दूर रहकर, आर्य तत्वज्ञान को जीवन में उतार कर, स्वार्थ विहीन, भ्रष्टाचारमुक्त, दिव्य, तेजस्वी राष्ट्र के निर्माण में क्षमतावान बनेंगे तो देश समुन्नत होगा। यही दिव्य भाव माँ के हृदय में चाहिए। दिव्य मातृत्व, दिव्य नागरिक निर्माण करेगा और नागरिक निर्माण करेंगे समुन्नत राष्ट्र!

देवियाँ देश की जाग जाये अगर।
युग स्वयं ही बदलता चला जायेगा।। ❑❑❑

अग्निहोत्र के आठ सूत्र (पृष्ठ २३ का शेष)

कामनाओं को पूर्ण करने वाले पूर्ण परब्रह्म। मैंने पूर्ण श्रद्धा व प्रेम से अपने सब सामर्थ्य अनुसार वेद मंतव्यों द्वारा यह अनुष्ठान आपकी कृपा से किया है। इसको करने में यदि मेरे द्वारा कोई त्रुटि व न्यूनता हो गई हो तो आप मुझे दोष मुक्त कर दें, प्रायश्चितरूप मैं यह विशेष आहुति, प्रार्थना सहित आपको अर्पित कर रहा हूँ। आप तो स्वयं पूर्ण हैं और आपका कार्य व विधि विधान भी पूर्ण है। पूर्ण में से यदि कोई कुछ ले भी लिया जावे तो भी वह पूर्ण ही रहेगा। हे पूर्ण प्रभो! हम याज्ञिक भी आपकी पूर्णता को प्राप्त करें। आप की पूर्ण कृपा से हम सब पूर्ण हों। हमारी यह विशेष प्रार्थना आप अवश्य ही स्वीकार करें।

८-पर्यावरण- परम पिता परमात्मा का यह पवित्र अनुष्ठान अग्निहोत्र प्राकृतिक, सामाजिक व वैचारिक प्रदूषण को समाप्त कर इस मृत्यु लोक के जीवन को जीने योग्य स्वर्गमय व सुगन्धित बना देता है। हवन में आहूत की जाने वाली सामग्री जिसमें सुगन्धिकारक, पुष्टिकारक व औषधीय जड़ी बूटियाँ डाली जाती हैं, शास्त्रीय विधि व ऋतु अनुसार बनाई जाती हैं। इनके द्वारा वायु, जल, अन्न, वनस्पति आदि की शुद्धता, निर्मलता व पवित्रता बनी रहती है। हवन से यथेष्ट वर्षा की प्राप्ति होती है, वर्षा से अन्न की वृद्धि, प्राणियों की समृद्धि व आरोग्य बढ़ता है।

यज्ञ से पर्यावरण की शुद्धि के साथ-साथ प्रदूषण फैलाने वाले कीटाणुओं का नाश हो जाता है और भयंकर रोग पनप नहीं पाते। इस प्रकार परम वैद्य परमेश्वर का यह पवित्र अनुष्ठान विश्व कल्याण का कारक है। प्रभु कृपा करें कि जीव मात्र के लिए परम उपयोगी, यह महायज्ञ घर घर में सम्पन्न हो और 'स्वाहा स्वाहा' व 'इदन्न मम' की ध्वनि सब ओर से सुनाई दे।

ओ३म्! ओ३म्!! ओ३म्!!!

बिन्दु बिन्दु विचार संकलन

❒भलेराम आर्य, सांघी वाले 9416972879

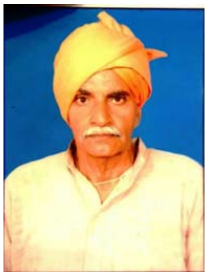

❖स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार है, संतोष सबसे बड़ा धन और विश्वास सबसे अच्छा संबंध।

❖तीन चीजें ज्यादा देर तक नहीं छुपी रह सकतीं– सूर्य, चन्द्रमा और सत्य।

❖आपका मन ही कल्पवृक्ष है, आप जैसा सोचेंगे वैसा बन जायेंगे।

❖अपने शरीर को स्वस्थ रखना भी एक कर्तव्य है, अन्यथा आप अपनी मन और सोच को अच्छा और साफ नहीं रख पाएंगे।

❖जब मन शुद्ध होता है तो खुशियाँ परछाई की तरह आपके साथ चलती हैं।

❖किसी परिवार को खुश, सुखी और स्वस्थ रखने के लिए सबसे जरुरी है– अनुशासन और मन पर नियंत्रण।

❖अगर कोई व्यक्ति अपने मन पर नियंत्रण कर ले तो उसे आत्मज्ञान का रास्ता मिल जाता है।

❖क्रोध करना एक गर्म कोयले को दूसरे पर फैंकने के समान है जो पहले आपका ही हाथ जलाएगा।

❖एक मोमबत्ती से हजारों मोमबत्तियों को जलाया जा सकता है फिर भी उसकी रोशनी कम नहीं होती उसी तरह खुशियाँ बांटने से कम नहीं होतीं।

❖ यह जगत् प्रतिध्वनि है अर्थात् हम जो देंगे, वही हमें वापिस मिलेगा। (मुस्कुराहट देंगे मुस्कुराहट मिलेगी)

❖ हमें तो गिरे हुए को उठाना है, क्यों गिर गया, यह नहीं पूछना है।

❖ जगत् दर्पण की भाँति है। जैसा रूप होता है वैसा ही दिखाता है, दोष हो तो दोष दिखाता है।

स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्य के जीवन पर एक और पुस्तक

प्रिय पाठकगण! हरियाणा के प्रमुख साहित्यकार, ५० से अधिक भजन इतिहासों के लेखक, शांतिधर्मी के संस्थापक और १७ वर्ष तक सम्पादक रहे स्व० श्री चन्द्रभानु आर्य भजनोपदेशक के जीवन और साहित्य की परिचायक एक पुस्तक 'चन्द्रभानु आर्य : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व' २०१६ में प्रकाशित हुई थी। अब उनके जीवन और कार्यों पर एक और पुस्तक का सम्पादन हरियाणा के प्रमुख युवा साहित्यकार गुगनराम सोसायटी के सचिव, डॉ० नरेश सिहाग बोहल (सम्पादक बोहल शोध मञ्जूषा शोध पत्रिका एवं विधि परामर्शक शांतिधर्मी हिन्दी मासिक) कर रहे हैं। यह एक शोध पुस्तक होगी और ISBN के साथ प्रकाशित होगी। इस पुस्तक के लिए आप पण्डित चन्द्रभानु आर्य के जीवन और कार्यों से सम्बंधित अपने शोधात्मक आलेख/ साहित्यिक विश्लेष्णात्मक लेख और उनके जीवन के संबंध में संस्मरणात्मक लेख भेज सकते हैं।

कृपया संबंधित सामग्री ईमेल द्वारा या पंजीकृत डाक से ३१ जुलाई से पूर्व अधोलिखित किसी पते पर अवश्यमेव भेज दें। स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्य के साहित्य के लिए आप शांतिधर्मी कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं।

विशेष : कृपया अपने आलेख पंजीकृत डाक/कूरियर या ईमेल द्वारा ही भेजें।

सहदेव समर्पित (9416253826)
shantidharmijind@gmail.com
सम्पादक शांतिधर्मी,
७५६/३ आदर्श नगर पटियाला चौक जींद–१२६१०२

डॉ० नरेश सिहाग (9466532152)
nksihag202@gmail.com
सम्पादक बोहल शोध मंजूषा,
२०२, न्यू हाऊसिंग बोर्ड भिवानी–१२७०२१

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा प्रियंका प्रिंटर्स, जींद के लिए ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से प्रकाशित। सम्पादक : सहदेव

ओ३म्

M- 98964 12152

रवि स्वर्णकार

हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात
आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो. रविन्द्र कुमार आर्य

६, आर्य समाज मंदिर, रेलवे रोड़, जीन्द (हरि०)-१२६१०२

ओ३म्

M.A. : 9992025406
P. : 9728293962

NDA No. : 236964
DL No. : 2064

अशोका मैडिकल हॉल

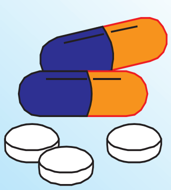

अशोक कुमार आर्य

Pharmacist, आयुर्वेद रत्न
R.M.P.M.B.M.S.

हमारे यहाँ पर नजला, पथरी, ल्यूकोरिया,
शारीरिक कमजोरी, दाद, खारीश का
आयुर्वेदिक देशी जड़ी बूटियों द्वारा ईलाज

विशेष : हमारे यहाँ जीवन दायिनी च्यवनप्राश मिलता है।

अशोका मैडिकल हाल नजदीक वैद्य रामचन्द्र हस्पताल, पटियाला चौक, जीन्द

प्रिय आर्य बन्धुओं व बहिनों,

सादर नमस्ते!

आपको ज्ञात ही होगा कि राजस्थान प्रान्त का उदयपुर नगर एक अति मनोरम नगर है। यहीं पर स्थित 'नवलखा महल' कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचनास्थली है। 1992 में यह आर्यसमाज को हस्तगत हुआ था तब से अब तक प्रभु कृपा से, भगीरथ पुरुषार्थ तथा आप लोगों के स्नेह से यह एक सुन्दर स्मारक बन चुका है। जिसके दर्शनार्थ लगभग 30000 (तीस हजार) पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं। यहाँ प्रतिवर्ष आयोज्य सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव भी आर्य जगत में विशिष्ट स्थान रखते हैं।

21 वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव दिनांक 6 अक्टूबर से 8 अक्टूबर 2018 तक आयोज्य है।

इसी में पधारने हेतु यह अग्रिम अनुरोध है।
मानस बनावें इष्टमित्रों, परिवारीजनों के साथ आने का।
पर्यटन तथा धर्मलाभ साथ-साथ हो जाएगा।
इस निवेदन को आए Acknowledge भी करेंगे तो प्रसन्नता होगी।

निवेदक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर- 313001

दूरभाष- 0294-2417694, 7229948860, 9314235101